Justice For Sidhu Moosewala

VOL-3

Akanksha Awasthi
&
Hitesh Kumar Mutreja

ਉੱਚੀ ਰੱਖੀ ਸੋਚ ਮਾਲਕਾ
ਨਾ ਮੰਨ 'ਚ ਆਵੇ ਖੋਟ ਮਾਲਕਾ
ਆਹੀ ਅਰਦਾਸ ਸਾਡੀ ਰੋਜ਼ ਮਾਲਕਾ
ਸੱਚੇ ਰਹੇ ਸਫ਼ਰਾਂ ਚੱਲਦਿਆਂ
ਸਾਡੀ ਮਿਹਨਤ 'ਚ ਨਾ ਰਹੇ ਕੋਈ
ਟੋਟ ਮਾਲਕਾ

JEC Publication

Publishers and Distributors

Published by JEC Publications 2023
Alinagar, Mughal Sarai, Chandauli (U.P.), 232101
Regd under MSME & ISO certified company
Email: jecpublication@gmail.com
Website: https://www.jecpublication.com

JEC Publications and its logo are trademarks of
JEC Publications, Mughal Sarai

Title: JUSTICE FOR SIDHU MOOSEWALA VOL-3
By : Hitesh Kumar Mutreja & Akanksha Awasthi
Language: Hindi, Punjabi mix
Copy-right © Hitesh Kumar Mutreja & Akanksha Awasthi
ISBN: 978-93-5749-703-9
Price: 349/-
Number of Pages: 94
Typeset in Times New Roman by Prithvi Raj Singh
Produced by JEC Publications™
Printed at JEC Printing Technology (India)

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the publishers Can go This is a work of fiction. The characters, places, institutions and events described in this book are either a creation of the author's imagination or have been used in a fictitious manner. any resemblance to people living or dead, Places, events, brothers or organizations are completely Coincidental.

ਮੁਖਬੰਧ

ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਸਿਮਰਨ /\

ਸਾਲ ਹੋ ਗਯਾ

ਪਰ ਇਨਸਾਫ ਗਾਇਬ ਹੈ।

ਝੂਠੇ ਲਾਰੇ ਤੇ ਅਧ ਵਿਚਕਾਰ ਛੱਡਣ ਵਾਲੇ

ਝੂਠੇ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਮੂੰਹ ਤੇ ਚੜਿਆ

ਅੱਜ ਨਕਾਬ ਗਾਇਬ ਹੈ।

ਪਰ ਨਹੀਂ ਗਏ ਓਹ ਲੋਕ

ਜੌ ਅੱਜ ਵੀ ਮਾਣ ਕਰਦੇ ਨੇ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਪੁੱਤਰ ਸ਼ੁਭਦੀਪ ਤੇ।

ਮੈਨੂੰ ਵੀ ਮਾਣ ਹੈ ਓਸ ਲੋਕ ਗੀਤਕਾਰ ਤੇ ਜੀਹਨੇ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਦਾ ਦਰਦ ਸਮਝਿਆ। ਸਮਾਜ ਦੇ ਹਰ ਬੁਰੇ ਪਹਿਲੂ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਕਲਮ ਦੇ ਗੀਤਾਂ ਰਾਹੀਂ ਜਗਜ਼ਾਹਿਰ ਕੀਤਾ । ਓਹਨੇ ਗਾਇਕੀ ਦੇ ਖੇਤਰ ਵਿਚ ਸਿਖਰਾਂ ਤੇ ਪਹੁੰਚਣ ਲਈ ਬੁਲੰਦ ਹੌਂਸਲੇ ਕੜੀ ਤੇ ਮੇਹਨਤ ਨਾਲ ਨਾਮ ਕਮਾਇਆ।

ਓਹ ਹੰਕਾਰ ਨਾਲ ਨਹੀਂ ਮਿੱਟੀ ਨਾਲ ਜੁੜਿਆ ਰਿਹਾ।

ਮੈਨੂੰ ਮਾਣ ਹੈ ਆਪਣੇ ਸਾਰੇ ਸਾਥੀਆਂ ਤੇ ਜੌ ਅੱਜ ਵੀ ਖੜਨ ਦਾ ਜਜ਼ਬਾ ਰਖਦੇ ਨੇ। ਇਨਸਾਫ ਨੂੰ ਅੱਗੇ ਆਉਂਦੇ ਨੇ। ਇਕ ਮਾਤਾ ਪਿਤਾ ਦੀ ਪੀੜ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਪੀੜ ਸਮਝਦੇ ਨੇ। ਰੋਜ਼ ਹੀ ਏਸ ਸਿਸਟਮ ਤੋਂ ਇਨਸਾਫ ਦੀ ਗੁਹਾਰ ਲਗਾਉਂਦੇ ਨੇ।

ਮੇਰੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ਾਂ ਬੇਸ਼ੱਕ ਛੋਟੀਆ ਨੇ ਪਰ ਮੈਨੂੰ ਮਾਣ ਹੈ ਤੁਹਾਡੇ ਸਾਰਿਆ ਤੇ।

ਤੁਹਾਡੇ ਸਾਰਿਆ ਦਾ ਇੱਥੇ ਹੋਣਾ ਏਸ ਗੱਲ ਦਾ ਵਾਕਫੀ ਸਬੂਤ ਦੇਂਦਾ ਕੇ ਇਨਸਾਨੀਅਤ ਅੱਜ ਵੀ ਕਿਤੇ ਨਾ ਕਿਤੇ ਜ਼ਿੰਦਾ ਹੈ।

ਤੁਹਾਡੀ ਕਲਮਾ ਦੀ ਸਿਫਤ ਜਿੰਨੀ ਕੀਤੀ ਜਾਵੇ ਉਨੀ ਹੀ ਘੱਟ ਹੈ।

ਇਹ ਕਿਤਾਬ "vol 3 " ਦਾ ਮੁੱਖ ਮੰਤਵ ਤੁਹਾਨੂੰ ਤੇ ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ , ਸਭ ਨੂੰ ਇਕਜੁੱਟ ਕਰਨਾ ਤੇ ਇਕ ਫੈਨ ਦੇ ਤੌਰ ਤੇ ਤੁਹਾਡੇ ਖੁਦ ਦੇ ਜਜ਼ਬਾਤਾਂ ਨੂੰ ਮੁੜ ਸਭ ਲੋਕਾਂ ਤੱਕ ਪਹੁੰਚਾਉਣਾ ਹੈ।

ਲੋਕਾਂ ਨੂੰ ਇਨਸਾਫ਼ ਦੀ ਲੜਾਈ ਵਿੱਚ ਮੁਖਰ ਕਰਨਾ,

ਇਨਸਾਨੀਅਤ ਕਰਦਾ ਕੀਮਤਾਂ ਨੂੰ ਸਭ ਦੇ ਸਾਹਮਣੇ ਰੱਖਣਾ ਅਤੇ ਸਾਬਿਤ ਕਰਨਾ ਕੇ ਹਰ ਕੋਈ ਏਸ ਇਨਸਾਫ ਦੀ ਲੜਾਈ ਵਿਚ ਅੱਗੇ ਆ ਸਕਦਾ ਹੈ। ਏਸ ਕਿਤਾਬ ਦਾ ਪ੍ਰਮੁੱਖ ਉਦੇਸ਼ ਆਹੀ ਹੈ।

ਮੈਂ ਵੀ ਚਾਹੁੰਦਾ ਕੇ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਕਿਸੇ ਵੀ ਪਰਿਵਾਰ ਨੂੰ ਸਿਸਟਮ ਤੋਂ ਲਾਰੇ ਨਾ ਮਿਲਣ । ਰੋਜ਼ ਸੜਕਾਂ ਤੇ ਮਾਤਾ ਪਿਤਾ ਨੂੰ ਪੁੱਤ ਦੇ ਇਨਸਾਫ ਲੈਣ ਲਈ ਸੜਕਾਂ ਤੇ ਧੱਕੇ ਨਾ ਖਾਣੇ ਪੈਣ।

ਸਿਸਟਮ ਵਿਚ ਸੁਧਾਰ ਹੋਵੇ ਤੇ ਹਰ ਅਪਰਾਧੀ ਤੇ ਨਕੇਲ ਕਸੀ ਜਾਵੇ ਤਾਂ ਜੌ ਅਖੀਰ ਕਾਤਲਾਂ ਨੂੰ ਉਚਿਤ ਦੰਡ ਮਿਲ਼ੇ। ਅਸੀ ਆਹੀ ਆਸ ਰੋਜ਼ ਕਰਦੇ ਹਾਂ ਤੇ ਇੰਸਾਨੀਅਤ ਖਾਤਿਰ ਅਖੀਰ,ਤੱਕ ਡਟ ਕੇ ਖੜਨ ਦਾ ਵਾਦਾ ਕਰਦੇ ਹਾਂ।

Hitesh kumar Mutreja

ਹਿਤੇਸ਼ ਕੁਮਾਰ ਮੁਟਰੇਜਾ

(ਲੇਖਕ)

ਮੇਰਾ ਨਾਮ ਹਿਤੇਸ਼ ਕੁਮਾਰ ਮੁਟਰੇਜਾ ਹੈ ਅਤੇ ਮੈਂ ਪੰਜਾਬ **ਦੇ ਪਿੰਡ ਸਘੋਲ** ਫ਼ਤਿਹਗੜ੍ਹ ਸਾਹਿਬ ਤੋਂ ਆਇਆ ਹਾਂ। ਕਾਰੋਬਾਰ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ, ਮੇਰੇ ਸ਼ੌਕ ਵਿੱਚ **ਕਵਿਤਾਵਾਂ ਤੇ ਗੀਤ** ਲਿਖਣਾ ਸ਼ਾਮਲ ਹੈ। ਮੈਂ ਕਈ ਸਾਲਾਂ ਤੋਂ ਪੰਜਾਬੀ ਸਾਹਿਤ 'ਤੇ ਕੰਮ ਕਰ ਰਿਹਾ ਹਾਂ। ਮੇਰੀਆਂ ਬਹੁਤੀਆਂ ਸਾਰੀਆਂ ਕਵਿਤਾਵਾਂ ਪੰਜਾਬੀ ਭਾਸ਼ਾ ਵਿੱਚ ਮਨੁੱਖਤਾ ਨਾਲ ਸੰਬੰਧਿਤ ਹਨ ਅਤੇ ਸਮਾਜ ਨੂੰ ਸਹੀ ਰਾਹ ਦਰਸਾਉਂਦੀਆਂ ਹਨ। ਮੇਰੀ ਇਹ ਕਿਤਾਬ ਮਨੁੱਖਤਾ ਬਾਰੇ ਹੈ **ਅਤੇ ਸਿੱਧੂ ਵੀਰ ਜੀ ਦੇ ਇਨਸਾਫ਼ ਦੀ ਮੰਗ ਪ੍ਰਤੀ ਹੈ।**

Akanksha Awasthi

मै आकांक्षा अवस्थी,
मुझे बुक्स रीडिंग करना अच्छा लगता है।
साहित्य मे रुचि होना एक अलग बात है पर उसको पन्नो पर लिखना अलग बात है। हम अगर आज के समय मे कोई तरकी करना चाहे तो लोग उसकी टांग खीचते है कोई किसी को आगे बढ़ते नही देख सकता या फिर यूँ भी कह सकते है अगर आप आज के समय के हिसाब से नहीं चलते तो आप पीछे ही रह जाओगे।
मैंने ये बुक इसलिए लिखी है कि हमारे समाज मे जो भी हो रहा है सही या गलत वो लोगो तक पहुँचे, मैंने मणिपुर मे हुई दरिंदगी के बारे मे बोला। किसानो के हक के लिए बोला सरकार के खिलाफ बोला और जो "मेरा मुख्य मुद्दा है बुक लिखने का, वो यह, मेरे आइडल शुभ दीप सिंह सिधु"।
जिनसे हमे जिंदगी जीने का सही सलीका और सच के लिए अपनी आवाज़ को बुलंद करने का हौसला मिलता है।
आज इसलिए मैंने ये बुक लिखी है अन्याय के खिलाफ । हम हमेशा अपने माँ चरण कौर जी बापू बलकौर सिंह जी के साथ है। उनके बेटे

और मेरे आइडल को न्याय दिलवाना ही मेरा मकसद है और इसके लिए मै हमेशा लड़ूंगी जब तक मेरे आइडल सिधु मूसेवाला को न्याय नही मिल जाता। हमको मिलकर एकसाथ इस गैंगस्टरवाद को खतम करवाना है। में चाहती हूं के हम सभी एकजुट होकर इंसाफ के लिए लड़े। एकता मे बहुत ताकत है किसी भी अन्याय के खिलाफ खड़े होने मे। मेरा यही निवेदन है सबसे के सभी इस अन्याय के खिलाफ आवाज उठाएं और हमारा साथ दे ।। में अपने भाई हितेश की भी बहुत आभारी हूँ ,जिन्होंने मुझे पुस्तक के इस भाग में शामिल किया। उनका अनथक प्रयास असामान्य है और सराहनीय भी।

✍ Akanksha Awasthi

ये सारा कुछ जो हुआ ये तो पहले से ही प्लान किया गया था "सिधु मूसेवाला" की हत्त्या कोई छोटी घटना नही है फिर भी सरकार सोई हुई है क्युकि वो खुद ही इस हत्त्या कांड मे शामिल है इसीलिए तो अभी तक सिक्योरिटी लीक करने वाला पकड़ा नही गया उसको बचाया जा रहा सारे सबूत होने के बाद भी क्यों? सिधु मूसेवाला की हत्त्या का मेन मास्टर माइंड फरार है 15 महीने होने के बाद भी क्यों लॉरेंस बिश्नोई को जेल से इंटरव्यू करवाकर महान दिखाने की कोशिश हो रही क्यों? क्यु सरकार हमारे सवालों के जवाब नही देती है क्यों? ?

हम शांत नही रहेंगे जब तक सिधु मूसेवाला को और उनके परिवार और फैंस को न्याय नही मिल जाता।

सिधु मूसेवाला और उनके परिवार को न्याय दो।

justice for our precious gem 💎

#JusticeForSidhuMooseWala

LEGENDS NEVER DIE.....

NEVER FOLD, NEVER BACK DOWN

Justice for Sidhu Moosewala

Table of Contents

1. ਹਿਤੇਸ਼ ਕੁਮਾਰ ਮੁਟਰੇਜਾ 5
2. अच्छा है, मैं अनपढ़ हूँ 1
3. कोई क्यों आवाज नहीं उठाता है 4
4. आवाज उठाओ 7
5. वो सितारा ढूँढती हूँ 9
6. जीवन और शतरंज 11
7. कठोर परिश्रम 13
8. घायल उसकी रूह हुई(मणिपुर हिंसा) 15
9. मेहनत का मोल 16
10. इंसानियत 18
11. अन्नदाता देश का 20
12. धर्म के नाम पे 22
13. गुलामी किसे कहते हैं 24
14. राजनीति 26
15. आंदोलन 32
16. अनकही 35

17. **ਤਕਰਾਰ** **40**

18. **ਚੁੱਪ ਵੱਟ ਲੈਣਾ** **41**

19. **ਕਦੋਂ ਮਿਲਣਾ ਇਨਸਾਫ਼** **43**

20. **ਜੈ ਲੜਨਾ ਹੈ ਤਾਂ ਨਾਲ ਹਕੂਮਤਾਂ ਮੱਥਾ ਲਓ** **45**

21. **ਨਿਤ ਹੀ ਹੁੰਦੀ ਕੱਲ** **47**

22. **ਲਿਖਤਾਂ ਰਾਹੀਂ ਮੈਂ ਖੁਦ ਨੂੰ ਢਾਲਿਆ** **49**

23. **ਜਿੰਦਾ ਸਾਡੇ ਲਈ ਤੂੰ ਅੱਜ ਵੀ** **50**

24. **ਫੁਰਸਤ ਕਿੱਥੇ ?** **52**

25. **ਸਾਡਾ ਇਸ਼ਕ** **54**

26. **ਜਦ ਮਨ ਅੰਦਰ ਦੀਵੇ ਜਗਣਗੇ** **56**

27. **ਔਖੇ ਰਾਹ ਤੇ ਚਲਦੇ** **58**

28. **ਨਵੀਂ ਸਮਾਜ ਦੀ ਲੋਅ** **59**

29. **ਜਦੋਂ ਤਾਰੀਖ਼ ਦੇ ਵਰਕੇ ਪੜ੍ਹੋਂ।** **61**

30. **ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਪੁਛਣ ਲਈ ਸਵਾਲ ਕਈ ਨੇ** **63**

31. **ਸਿਰਫ ਗੱਲਾਂ ਰਾਹੀਂ ਨੀ ਬਦਵਾਲ ਹੁੰਦੇ** **65**

Additional Pages

32. **काश 67**

33. **DEDICATED TO MY MOTHER........................69**

34. **ਮੋਹ ਦੀਆ ਤੰਦਾਂ(HARPREET KAUR)................... 72**

35. **GURJANT SINGH 76**

36. **GUMNAAM ❤ 81**

37. **कर्म करने में विश्वास रखना चाहिए 84**

38. **ENDING OF BOOK (ਸਮਾਪਨ)........................86**

अच्छा है, मैं अनपढ़ हूँ

अच्छा है, मैं अनपढ़ हूँ

मुझे बातें बनानी नहीं आती।

मैं देखती हूँ, दुनिया को;

मुझे झूठी दुनियादारी समझ में नहीं आती।

कम बोलती हूँ, पर सच बोलती हूँ

मुझे अफवाह फैलानी नहीं आती।

अच्छा है, मैं अनपढ़ हूँ

हां मुझे धोखाधड़ी नहीं आती।

कमा लेती हूँ, अपनी मैं मेहनत से;

मुझे कागजी चोरी नहीं आती।

हुनर तो सीख लेती हूँ;

पर जालसाजी मुझे नहीं आती।

अच्छा है, मैं अनपढ़ हूँ;

मुझे ये खबरें समझ नहीं आती।

समझती हूँ, मैं दर्द सीने का;

जख्म पर राजनीति करनी नहीं आती।

समझती हूँ, देश के खतरों को ;

इसलिए मुखबिरी करनी नही आती ।

शराफत ही मेरी अमानत है;

तभी अमीरी दिल की गुरबत के आड़े नहीं आती।

समझ थोड़ी सी कम ही होगी;

पर शराफत मुझको नहीं जाती।
अच्छा है, मैं अनपढ़ हूँ;

मुझे चुप रहने की सहोकारी नहीं आती।

शायद आज इसी जागती ज़मीर को लेकर
सच की आवाज अठाती हूँ।

सिधु मूसेवाले के न्याय के लिए
सरकार के खिलाफ आवाज उठाती हूँ।

हमेशा सच का साथ देने मे
लाखों परेशानी आती हैं,

हमारी आवाज को दबाने के लिये भी बहुत
लोग तैयार हो जाते है
लेकिन सच का साथ देने
कोई क्यों नहीं आता है आगे? ?

सिधु को उसके सच बोलने पर
उनकी आवाज को दबा दिया गया
लेकिन उनको मारने वाले भूल गए
सच कभी हारता नही है।

देख लो syl ,vaar , सभी गानों मे लोगो के हक़ की ही बात की है सिधु ने।

मेरा ज़मीर मरा नही है
इसलिए हमेशा सच ही बोलूँगी
सच का ही साथ दूँगी।

ये हिम्मत मेरे आइडल सिधु मूसेवाला से मिलती हैं।
उनको मेरा कोटि कोटि नमन है।।

कोई क्यों आवाज नहीं उठाता है

शुभदीप सिंह सिद्धू

तेरे लिए

जो हक इंसाफ की बात करता है

उसे चुप करवा दिया जाता है

बड़े पैसों के मोल से

अखबार तक यहां बिक जाता है।

जब कोई आवाज उठाए ,

गोलियों से सीना छल्ली कर दिया जाता है।

मेरा सवाल बस इतना है, सिद्धू

तुम्हारे इंसाफ को

कोई क्यों आवाज नहीं उठाता है।

में पूछती हूं इन लोगो से

क्यों कोई आवाज नहीं उठाता है।

क्यों उन गिद्धों को आज इंसान दिखाया जाता है।।

इतना कुछ गलत करने के बाद भी सरकार लॉरेंस बिश्नोई जैसे गुंडों को अपना जवाई बना कर रखती हैं।

जेल से इंटरव्यू करवाती है
और फिर भी लोग मौन होकर बैठे है।
सब देखते रहते है ।

"शुभ दीप सिधु" आज हमको इसी बात का अफ़सोस हो रहा है,
कि हम आपको न्याय दिलाने में कामयाब नहीं हो पा रहे हैं,
झूठ की आवाज बुलंद होती जा रही
और सच की आवाज को
बेरहमी से दबाया जा रहा हैं।

हमारी आवाज को आज भी दबाया था।

चीख चीख कर बताया था तुमने

अपनी अन्तर आत्मा ने उस राज को।।

के कैसे रौंदा था तुम्हारे शरीर को,

पर सबसे जायदा घायल तुम्हारी रूह हुई।

पर ना असर हुआ उन हैवनो पर जरा भी...

में भी रोई हू आज

बिलखती हुई सिसकियाँ भर रही थी।

शायद वो यह कृत्या करके

स्वयं मर्द बन गए होंगे,

लेकिन वो मर्द नही सिर्फ गीदड़ है।

जो इक शेर के अकेलेपन का फायदा उठा गए।

पर वो इंसान कभी ना बन पाये,

किसी के घर की ख़ुशियां को लूट कर।।

में पूछती हूं इन लोगो से

क्यूँ कोई आवाज नहीं उठाता है।

क्यूँ कोई सच के लिये आवाज बुलंद नहीं कर सकता ,
क्यूँ हम एक निर्दोष बंदे की नृशंस हत्या करने वालो के खिलाफ आवाज नही उठाते हैं।
ये सच तो सभी के सामने है
हमें तो यही लगता है
सिधु मूसावाला की हत्या मे सरकार भी शामिल हैं।

आवाज उठाओ

न्याय के लिये लड़ो...
लड़ नही सकते तो बोलो..
बोल नही सकते तो लिखो..
लिख नही सकते तो साथ खड़ो..
और साथ में
अपने साथी का मनोबल भी भड़ाओ
और अगर ये भी नही कर सको तो...
कम से कम किसी का भी
मनोबल तो मत गिराओ।
यही चाहती हुं में
कहना आप सभी से।
निवेदन है मेरा।
शुभ दीप सिधु आपने सभी के
हक़ के लिए आवाज उठाई।।
लेकिन वही आज
शायद आप उनके ही खिलाफ हो गये..
आप सच का उनके इंसाफ का
साथ देने के काबिल नही बन पाये।
क्यों इंसाफ मांगने को आगे नहीं पाए?
सीधा सीधा कहूं तो।
लगता है

आप भी शायद उस गंदी राजनीति से हार गए।
हमने अपना आइडियल खो दिया हमेशा के लिये।।
लेकिन सभी से कहूंगी
में आकांक्षा अवस्थी
अगर जिंदगी मे कुछ बनना हो तो
सिधु मूसेवाला जैसा इंसान बनना।
सच के लिये और न्याय के लिए
लड़ना।
सच के खिलाफ नही।
क्योंकि ये राजनीति
किसी की सगी नही होती।।

वो सितारा ढूँढती हूँ

आज जो खोया जगत में वो नज़ारा ढूँढती हूँ।
आसमा में चमकीला सा वो सितारा ढूँढती हूँ।।
जो चमकता था कभी सुदूर असीमता में।
जो सुशोभित कान्ति था नीले आसमान पे।।
आसमा को कर रजत सम इठलाए खुद पे।
पर कभी खोये भी छवि मेघों के आँचल में।।
पल रहा था यूं ही जीवन सृष्टि के हर क्षण में।
कल रात जो टूटा बिखर के,
नापता है आसमा की ऊंचाई
जमीं से।।
यूँ चमक के, यूँ दमक के, यूँ सँवर के, यूँ बिखर के।
खो दिया अस्तित्व अपना
आसमां का अंग बनके।।
क्या ढूँढते हैं आज भी पक्षी आसमां के।
टूट गया जो वो सितारा नीले आँचल से।।
सिद्धू मूसेवाला।

सृष्टि की रीति का चक्र आज देखती हूँ।
आज जो खोया जगत में वो नज़ारा ढूँढती हूँ।।
फिरसे आसमां में वोही
चमकीला सा वो सितारा ढूँढती हूँ।।

सिधु तुमको हर ओर ढूंढती हूँ।
तुमने एक मेहनत का सिलसिला शुरू किया था।
लेकिन कोई तुमको समझ नही पाया।।
तुमने तो अपनी ज़मीर का
एक मुकाम हाँसिल किया था।
और तुम्हीं ने एक इतिहास लिख दिया था।।
तुम सबकी प्रेरणा बन गए
और शायद आज इसीलिए
तुमको सबकी तरसती निगाहें
आसमान मे कही ढुंढती है।।

जीवन और शतरंज

जीवन और शतरंज मे ।
आता नही हैं ठहराव कही भी।।
हारें हुए सिपाही कें न रहतें हुवे भी।
चलतें रहते है ये अनवरत हीं।।
कौन किसें कब़ मात देगा,
यह क़हना यहां मुश्किल हैं।
मग़र ये सच हैं कि बैठें है
भेड़िए हर ओर घात लगाक़र।।
हर क़दम पर सतर्क रहते लडना होग़ा।
यह नियम हैं।
भावनाओ के आवेश मे।।
मुश्किल हो जाता हैं, ख़ेल और भीं।
एक़ हल्की सी चूक़ पर
समर्थं होते हुवे भी।।
टूट के बिखर जाता इंसान यहां पर।
होता हैं आकंलन सहीं और ग़लत का।।
खेल क़ी समाप्ति पर हार –ज़ीत का ।
यश–अपय़श और चलतें हैं दौर मन्थन के भीं।।
चौंकोर शतरंज क़ी बिसात पर मरें हुवे प्यादे
हाथी, घोडे पुन खडे हो जाते है ।।
बाज़ी खत्म होनें पर नये खेल के लिये।

किंतु जीवन-शतरंज की बिसात पर।।
नही लौटता हैं कोई भी
एक़ बार चलें जानें के बाद।
रह ज़ाती हैं शेष मात्र स्मृतियां ही
जीवन और शतरंज मे
अन्तर हैं मात्र इतना-सा ही।।
सिधु मूसेवाला ने सभी के लिए
अच्छा किया अच्छा सोचा।
लेकिन उनको कोई समझ नही पाया ।।
और यहां। लोग मरने के बाद ही ।
वैल्यू करते दिखते है।
है ना कमाल की बात।

कठोर परिश्रम

कल का दिन क़िसने देख़ा हैं,
आज़ अभी की ब़ात क़रो।
गलत विचारों को त्यागों मन से,
सत्य क़ो आत्मसात क़रो।
ज़िन घड़ियो मे हंस सकते है,
क्यो तड़पे संताप करे।
सुख़-दुख तो हैं आना-ज़ाना,
कष्टो में क्यों विलाप करे।
जीवन के दृष्टिकोणो को,
आज़ नया आयाम मिलें।
सोच सकारात्मक हों तो,
मन क़ो पूर्ण विराम मिले
हिम्मत क़भी न हारो मन क़ी,
स्वयं पर अटूट़ विश्वास रख़ो।
मंजिल ख़ुद पहुचेगी तुम तक़,
मन मे सोच, कुछ ख़ास रख़ो।
सोच हमारीं सही दिशा पर,
संकल्पो का संग़ रथ हो।
दृढ निश्चय क़र लक्ष्य क़ो भेदो,
चाहें कितना भी, क़ठिन पथ हो।
जीवन मे ऐसे उछलों कि,

आसमां को छेद सक़ो।
मन की गहराईं मे डुबो तो,
अपने अंतरमन क़ो भेद सक़ो।
इतना फ़ैलो क़ायनात मे,
जैसे सूरज़ की रोशनाईं हो।
इतने मधुर ब़नो जीवन मे,
हर दिल की शहनाईं हो।
ज़ैसी सोच रख़ोगे मन मे,
वैसा ही वापस पाओगें।
पर उपक़ार को जीवन दोगें,
तुम ईश्वर ब़न जाओगें।
तुम ऊर्जा के शक्ति पुंज़ हो,
अपनी शक्ति क़ो पहचानों तुम।
सद्भावो को उत्सर्जित क़र,
सब़को तुम अपना मानों तुम।
इसका जीता जागता सबूत है।।
"शुभ दीप सिंह सिधु"
जिन्होंने अपनी मंजिले खुद बनाई
और उन तक पहुंचे भी ।।
कितनी ही कठोर परिश्रम की।
ऊंचे मुकाम तक पहुंचे भी।।

घायल उसकी रूह हुई(मणिपुर हिंसा)

हुआ ईश्वर को भी पछतावा।
क्यू गिद्धों को इंसान बनाया है यहां।।
भारत में पूजते देवी को।
लेकिन अस्मत भी यही है लूटते दरिंदे यहां।
उसकी आवाज को भले ही दबाया था।
लेकिन चीख चीख कर बताया था
उसकी अन्तर आत्मा ने।।
जो उसके साथ हुआ।
रौंदा गया था उसके शरीर को,
पर सबसे जायदा
घायल उसकी रूह हुई।
लेकिन न असर हुआ उन हैवनो पर जरा भी...
जब वो बिलखती हुई सिसकियाँ भर रही थी।
शायद वो मर्द बन गये होंगे,
उसके वस्त्र छीनकर...
जो इंसान तक न बन पाये,
नारी की अस्मिता को लूट कर।।
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ का स्लोगन देने वालों
जरा गौर करो इस तरफ भी
जहाँ हर एक सेकंड मे
इक बेटी की अस्मत लुटी जा रही हैं।।

मेहनत का मोल

कैंसे गुज़ारनी हैं जिन्दगी
कैसे जीवन ब़सर करना हैं।
बेंरहम धक्कें सब़ कुछ सिखा देते है।।
चाहें कितनी मर्जी ऐशो आराम मे गुज़री हो
किसी की जिन्दगी।
पर तकलीफ़ के चन्द लम्हें ही
जालिम जिंदगी क़ी हकीक़त बता देते हैं ।।
गरीब़ होना सब़से बड़ा अभिशाप हैं, इस जमीं पर।
ना चाहतें हुए भी लोग ज़हर पिला देते हैं।।
चन्द झटकें नुक्सान के
ढाते हैं सितम ब़हुत।
जो विशालक़ाय हाथियो के
पैरो को भी हिला देते हैं ।।
लेकिन क़ुछ लम्हें हसीं गर
जिन्दगी को मिल जाये।
तो वे बडे से बडे गम को
भुला देते हैं।।
मिल जाये अगर मन मांगी दुआ
यहा क़िसी को।
फ़िर तो सपने, हकीकत में
अपनीं गोदी मे सुला लेते हैं ।।

पर अचानक़ आया हुआ रूपया पैंसा,
धन दोलत ऐश आराम।
गरीब सें गरीब़ इन्सान पर भी
एक अजब़ सा नशा चढा देते हैं।।
ज़ब यहीं गरीब से अमीर बने लोग
वो होते हैं उसीं दौलत की चकाचौध मे।
फ़िर तो अपनें ही अपनो को
एक़ एक पैसें का मोहताज बना देते हैं ।।
अचानक़ आई हुईं कोई मज़बूरी आफ़त।
पहाड जैसे दिल वालें इन्सानो की भी
सांसे फ़ूला देती हैं।।
और आता हैं ज़ब क़भी उपरवाला अपनी पर।।
तो अच्छें भले स्वस्थ इन्सान को भी
जमीं से उठा देते हैं ।।
चन्द छोटें छोटें लम्हो।।
मेहनत का मोल
दिन रात मेहनत करने वाले इंसान से पूछिए।
वो बताएगा जरूर।

इंसानियत

आज हर इंसान, हर इंसान से महरूम है।
जिंदगी का अब बस यही दस्तूर है॥
आज हर इंसान है अपने अपने रास्ते।
सोचता न कोई किसी के वास्ते॥
वैश्विक समाज जो ये सोच बदलता जा रहा।
मानसिकता से इंसानियत को छलता जा रहा॥
इंसानियत का हर रिश्ता टूटने पर मजबूर है।
आज कल बस हर कोई जीने को मजबूर है॥
धन, सम्पदा, संपन्नता और स्तर की जो होड़ है।
हर तरफ अशांति और कटुता का ही शोर है॥
हर नज़र में आज दिखता नहीं प्यारा समा।
हर तरफ है स्वार्थ खोया कहाँ, अपना जहाँ?
दौड़ में दुनिया की जो रफ्तार बढ़ती जा रही।
इंसानियत की हर मिसाल मायने बदलती जा रही॥
सिधु ने अपनो के हक़ के लिये आवाज उठाई,
पर अपनो ने ही छलावा किया उनके साथ! !
आज के युग मे ऐसा कोई नही जिस पर हम,
विस्वास करें,

क्योंकि लोगो ने यहाँ पर गद्दारी,

की चादर ओढ़ रखी,

और आज फिर से, अब कोई सिधु जैसा

किसी के हक़ के लिए

अपनी आवाज बुलंद नही करेगा! !

अन्नदाता देश का

अन्नदाता देश का रजत स्वर्ण उपजाता है।
धरती ही जीवन उसका
आसमां ही आसरा है॥
जेठ तपे या पूस की सर्दी
खेतों में वो दिन रात बिताता है।
निज प्राणों की करे न चिंता
अपनी फसल का रक्षक बन जाता है॥
और मेहनत कर अथक परिश्रम से जीवन बिताता है।
कभी सृष्टि से कभी कष्टों से
हर पल मात वो खाता है॥
स्वयं थके पर पाँव न रोके
इसलिए बंजर भी लहलहाता है।
सृष्टि व वृष्टि सताये
यह तो समझ में आता है॥
मानव ही मानव का शत्रु
ऐसे क्यूँ बन जाता है?
अन्नदाता देश का रजत स्वर्ण उपजाता है।
क्यूँ न हिलें सरकारें जब
फाँसी पर कृषक चढ़ जाता है।
क्यूँ न गिरी महलों की दीवारें
जब अभाव में वो जान गँवाता हैं॥

देश का पोषण करने वाला
खुद कुपोषित हो जाता है।
अमृतफल उपजाने वाला
अब संघर्ष करता नजर आता है।
कभी सूद तो कभी ब्याज
इनमें तिल – तिल जीवन बिताता है॥
न मतलब महलों गाड़ी से,
न मतलब सोना चाँदी से
बस मेहनत का मोल वो माँगता है॥
ऐसे किसान के आगे सदा ये
मस्तक झुक – झुक जाता है।
अन्नदाता देश का रजत स्वर्ण उपजाता है।

धर्म के नाम पे

ये धरती है सबकी एक सी,
अम्बर भी है एक सा।
है सूरत सबकी एक सी,
और लहू का रंग भी एक सा।
फिर क्यों बांटे हैं मुल्क सभी?
क्यों सरहद की लकीरें खींची हैं?
क्यों द्वेष, अहिंसा और नफ़रत से,
ये प्यार की गलियाँ सींची हैं?
क्यों बाँट दिए हैं धर्म सभी?
क्यों जात-पात का खेल रचा?
इसी के अंतर्गत ही अब,
इन्सान में ना कोई ईमान बचा।
सरकारें तो वोटों की खातिर,
शैतान का रूप हैं धार चुकी,
बची खुची जमीर जो थी
अब उसको भी है मार चुकी,
वोटबैंक की राजनीति में,
धर्म को सीढ़ी बनाते हैं,
पहले तो छिपते फिरते हैं
फिर अपने रंग दिखाते हैं,
छोड़ के हाई सोसाइटी को

दलित के यहाँ ये खाते हैं,
समाचार वाले भी दलित बता कर
उनको खबर बनाते हैं,
अगर बराबर समझे तो
क्यों घर न उनको बुलाते हैं,
बाद में मिलने वालों को भी
मार के फिर ये भगाते हैं।
हरिजन, दलित, अनुसूची,
क्यों पिछड़ी जाति शब्दों का क्यों प्रयोग करें?
क्यों न ये सरकारें इनको
इंसानों के नाम से ही योग्य करें?
धर्म के नाम पे देखो कुछ तो
बिन मतलब ही घमासान करें,
इंसानियत ही मकसद है जीवन का
इस बात से फिर अनजान करें,
बांटनी है तो खुशियाँ बांटो,
गरीबों में बांटों मुस्कानों को।
मानो एक इन्सान को पर
अब तुम मत बेजुबान बनो।
ये धरती है सबकी एक सी।
बंद दुकाने करो धर्म क नाम पर।

गुलामी किसे कहते हैं

गुलामी किसे कहते हैं?
बुरी सोच की गुलामी।
ख़राब तहज़ीब की गुलामी।
इंटरनेट की गुलामी।
सारा दिन फोन में स्टफ देखने की
गुलामी सिखाई जा रही।
पाठ्यक्रम में बदलाव करके
गलत इतिहास पढ़ने की गुलामी सिखाई जा रही।
और सुनोगे आप मुझसे।
बुरे नेता को अच्छा कहने की गुलामी।
अपने अधिकारों के लिए लड़ने के अलावा
सब कुछ चुपचाप सहते रहने की गुलामी ।
आप अपने लोकतंत्र को सबसे ऊंचा बताते हैं।
लेकिन लोग कहां हैं?
मुझे तो बस भीड़ मुझे दिख रही है।
अंधी आँखों वाली भीड़।
आतंक से डरी हुई भीड़।
अगर आप हालात बदलना चाहते हैं।
तो अपनी आवाज़, बुलंद बनाओ।
सिधु मूसेवाला की तरह निडर होकर।
वो एक ज़िंदा ज़मीर वाले थे।
उन्होंने ना सिर्फ अपने लिए

बाकी सभी लोगो के लिए
सच की लड़ाइ लड़ी।
वो किसे के गुलाम नही बने।
और ना आप बनो।
उन्होंने अपनी मेहनत से
बड़ा नाम और मुकाम हासिल किया।
बिना किसी को अपना गॉडफादर बनाए।
इसी तरह सरकार की भी उन्होंने
किसी गलत बात का साथ नही दिया।
वो करते थे विश्वास।
समाज इससे नहीं बदलेगा कि
वो क्या लिखते या क्या बोलते या गाते है ।
समाज में सबके सहयोग से बदलाव आएगा।
जाने-अनजाने सभी लोग सूर्य की पूजा करते हैं।
लेकिन वो चाहते थे आप किसी दिन
खुद को सूरज कहें।
अपने गुलाम विचारों को जाने दें
और इस दुनिया को प्रबुद्ध करों ।।
अपने अस्तित्व के विचारों से।
तभी आएगा बदलाव।

राजनीति

बेईमानी इनका धर्म है।
ये नेता बड़े बेशर्म है।
सेंक लेते हैं राजनीतिक रोटियां।
जब देखे तवा गर्म है।

राजनीति का काम समाज के लिए
विकास और उन्नति के लिए नीतियां बनाना है।
लेकिन नेताओं ने राजनीति को
राज करने की नीति तक सीमित कर दिया है।
यहां नेता के कुत्ते बिल्लियाँ रोज़ खाते हैं
दूध माखन और कबाब।
यहाँ गरीबों को पड़ गए हैं खाने के लाले आजकल।

फुरसत नहीं है अब।
किसान को अनाज उगाने से।
ग़रीब को रोटी कमाने से।
और हमारे देश के नेताओं को
राजनीतिक रोटिया पकाने से।
यही सच्चाई है।
इन नेताओं से कहना चाहूंगी।
अगर सियासत करनी है तो

इमानदारी से करो।
जनता ने जो जिम्मेवारी सौंपी है
उस तुम खुद्दारी से करो।
राजनीतिक संघर्ष चुनाव तक रह गया।
पर विकास का मुद्दा, बहाव में बह गया।
हर बार शासक ने जुल्म ही किये।
हर बार गरीब, जुल्म दबाव में ही सह गया।

नेता अपनी राजनीति में मशग़ूल है।
ग़रीब के मुद्दे इनके लिए फ़िज़ूल है।
अपनी कुर्सी बचाने के लिए।
क्या नेताओं को देश का सौदा कबूल है?

सरहद के लिए खाकी लाल हो जाती है।
पर ख़बर सियासत की दलाल हो जाती है।
ज़ुल्म ढाये जाते हैं यहां आम जनता पर।
और राजनीति बैठे-बिठाए ही मालामाल हो जाती है।

क्या रंग है राजनीती के भी।
कभी भाई को भाई से अलग करती है।
तो कभी बाप को बेटे से जुदा करती है।
जितनी मर्ज़ी वफादारी निभा लो मगर।
सियासत कहां किसी से वफ़ा करती ।

राजनीति की सियासत के कई रंग देखे मैने।
रिश्तों पर हावी होते राजनीति के ढंग देखे मैने।
राजनीति के खेल में कोई सगा नहीं होता।

बाप बेटे एक दूसरे के काटते पतंग देखे मैने।
राजनीति का रिश्तों में उतना ही दखल हो।
जितना कि राजनीति रिश्तों में दरार ना बनें।
चूस रहे जो ग़रीबों के खून पसीने की कमाई
ऐसे दमनकारीयों की कभी सरकार ना बने।

राजनीति को विरासत समझ बैठे हैं।
भ्रष्टाचार को सियासत समझ बैठे है।
सत्ता के नशे में इतने चूर हैं ये नेता।
के देश को अपनी ही रियासत समझ बैठे हैं।
चुनाव प्रचार में ख़ूब वादे करते हैं यह।
समाज सेवा की खातिर ज़ाहिर इरादे करते हैं यह।
बदल जाते हैं चुनाव के बाद इनके असूल सभी।
राजनेता राजनिति और चापलूसी प्यादे करते हैं।

सहलाने ग़रीब के घाव आ जाएगा।
डूबती देख बचाने नाव आ जाएगा।
समाज सेवक बन घूमता है नेता।
जब भी देश में चुनाव आ जाएगा।

जब से झूठे नेता आ गए हैं प्रभाव में।
जनता परेशान है सुविधा के अभाव में।
सियासत के जो बन बैठे हैं सरोकार।
उन्हें मज़ा चखाना इस बार चुनाव मे
भ्रष्टाचारी बैठे हैं सरकार में।
तो कमी आएगी कैसे भ्रष्टाचार में?

पोलिटिकल स्टेटस जिसका ऊंचा होगा।
सियासत का पहुंचा हुआ खिलाड़ी होगा।
इस राजनीति में वही ईमानदार मिलेगा।
जो राजनीति में अभी अनाड़ी होगा।
राजनीति का लक्ष्य सिर्फ पैसा कमाना रह गया।
झूठ को सच, सच को झूठ दिखाना रह गया।
समाज सेवा के लिए सियासत में आना।
आकर नेता भरता ख़ुद का ही ख़ज़ाना रह गया।

ये नेता अपना उल्लू सीधा करना जानते हैं।
आम जनता को मात्र वोटों की गिनती मानते हैं।
इन्हें चाहिए राजनीति में खूद का ऊंचा स्टेटस।
झूठी बातें बोलकर भी ख़ूब सीना तानते है।

संसद में बैठ अनपढ़ नेता बना रहे नीति।
गड्ढे में देश को धकेल रही है ये राजनीति।

ये नेता कानून मानते कहां है।
कानून तो सिर्फ़ आम जनता के लिए है।
बड़े कमाल की ये है राजनीति ।
बड़े कमाल की ये है राजनीति ।

जनता जिनको गधा समझती थी वो नेता बन गए।
पढ़े-लिखे बने नौकर
और अनपढ़ राजनेता बन गए।
अगर बनना है तो सिधु मूसेवाला बनो।
उनकी तरह ईमानदार बनो।
जो राजनिति मे भी आये
वो भी ईमानदारी से बनो।
उन्हें पैसो का लालच नही था।
उन्होंने अपने पंजाब के हक़ की आवाज
उठाने की हिम्मत की।
अपने पंजाब को आगे बढाने की
कोशिश की ।
अपने गांव मानसा मूसा को
आगे लाने की कोशिश की।
किसान आन्दोलन मे किसानों का साथ दिया।
आरक्षण के लिए बोले।
बच्चों की शिक्षा के लिये भी बोले।
अस्पताल बनवाने के लिए बोले।

गरीबो के हक़ के लिए बोले।

सिधु मूसेवाला ने अपने पंजाब को

रंगला पंजाब बनाने की हर कोशिश की।

लेकिन जिनके हक़ के लिए उन्होंने ये सब किया

काश के वो लोग भी उनको समझ पाते।।

और हमने हमारा हीरा गवा दिया।

क्यूकि शायद इस सरकार को उनकी

अच्छाई रास नही आयी।

मेरी अपील लोगो से।

अभी भी वक्त है आवाज बुलंद करो।

सिधु मूसेवाला को जस्टिस दिलाने के लिये।।

आंदोलन

मेरा पानी उतरा देखकर।
मेरे किनारे घर मत बसा लेना।
मैं समंदर हूं।
लौटकर वापस जरूर आऊंगा।
ख्वाहिशों का मोहल्ला बहुत बड़ा होता है,
बेहतर यही है कि हम जरूरतों की गली मुड़ जाएँ.

देश चलता नहीं, मचलता है।
मुद्दा हल नहीं होता, सिर्फ उछलता है।
जंग मैदान में नहीं, सोशल मिडिया पर जारी है।
गोली खाकर देखी मैंने।
आज मेरी, तो कल तेरी बारी है।
चुनाव में जनता का जिद और नेता का प्यार,
चुकाना पड़ेगा बाद में ये सूद समेत उधार।
चुनाव के समय रिश्वत तो जनता को भी दिया जाता हैं।
लेकिन लेकिन लेकिन।
माल बांट कर खाने वालों।
सिर्फ़ नेताओं को ही क्यों बदनाम किया जाता है?

एक शक्स।
ईमानदारी को ताकत बनाकर राजनीति में आया,
मायूस होकर लौटना पड़ा
क्योंकि एक भी ईमानदार पार्टी नहीं पाया।
नेता जी कह रहे है देश बदल रहा है,
या नेता जी जनता से बदला ले रहे है।
एक रोटी चोरी हो जाएँ
तो आप लड़ने को तैयार हो जाते है,
ये नेता आपके घर को लूट रहे तो
आप कैसे चुप हो जाते है।

रोज अखबारों में पढ़कर यह ख्याल आया हमें,
इस तरफ आती तो हम भी देखते फस्ले–बहार।
इन्साफ जालिमों के हिमायत में जाएगा।
ये हाल है तो तो कौन अदालत में जाएगा।
अभी भी वक्त है संभल जाओ
कोई भी नेता किसी का सगा नही होता।
और इन गीदड़ो से देश बचाओ।

सिधु मूसेवाला को इंसाफ दिलाने के लिए
अपने मरे हुए ज़मीर को जगाओ
हम एक साथ आवाज बुलंद करने की जरूरत है।

नही तो एक बात याद रखना
अगर हम इस बार कुछ नही कर पाए
तो फिर कभी कोई सिधु मूसेवाला नही बनेगा
कोई सच का साथ नही देगा
हमारे हक़ के लिए नही लड़ेगा।
हम अगर आज इंसाफ का साथ नही दे पाए
तो सच्चाई हमेशा के लिए मर जाएगी।
जिसने अपने गानों मे सिर्फ अपनी जिंदगी
और लोगो की असलियत बताई
जिन्होंने अपने गानों मे
लड़की और बहनो की इज्जत की
कभी नशे को प्रमोट नही किया
अगर आज हम एक सच बोलने वाले
और सच के लिए बोलने वाले का साथ
नही दे पाए तो
सच हार जाएगा।।

अनकही

कोई टूटा है ।
कोई लुटा है कोई
तो है जो बिका है ।
मत पूछो टूटने वाले कौन है ।
लूटने वाले कौन है ।
और बिकने वाले कौन है
शायद झूठ चीखने लगा है
सत्य कही खोने लगा है
दुःशासन का साहस देखो
लंकापति का दुष्कर्म देखो
सब दिख जाएगा
छिप जाएगा ।
या फिर कहीं पर बिक जाएगा
कोई सौदा लाश की करेगा
कोई कफ़न बेच आएगा
कोई चिता को लूट जाएगा।
अग्नि देने पर लगेगा कर ।
जीने से घातक जाना मर।
रुको देखो कौन बिका
कौन है अभीतक रुका।
कौन बोलो नीलाम हुआ

कौन बेज्जत सरेआम हुआ।
सवाल सारे है गम्भीर
धीरज खोने लगे है वीर
सत्य का कत्लेआम हुआ
झूठ का खूब नाम हुआ
जो लड़ा वह मरा
बच गए कुछ कायर बुजदिल
छुछुन्दर का कब्जा हुआ
सांप खोजने लगा है बिल
घर बिका बाजार बिका
शहर सरेआम बिकेगा
बचा वही जिसका मोल नही
व्यक्ति व्यर्थ है तौल नही
बिकने दो लूटने दो
अभी पड़ोसी की है बारी
हमे क्या हम तो बचे हैं
खुद को बचाने की हो तैयारी
बचने दो सजने दो हंसने दो
किसी की बर्बादी को मचने दो
जयकारा लगाते है लोग यहां
जयकारा तो लगाने दो
झूठा है तो क्या हुआ
किसी को गाल बजाने दो

न्याय अन्याय से है हारा
सत्य असत्य के आगे बेचारा
कबतक टिकेगा कितना रुकेगा
धैर्य रखो एकदिन बिकेगा
बिक जाएगा सब लूट जाएगा
सब बिकने दो लूटने दो
लेकिन तुम कुछ मत बोलो
देखो मगर मुँह मत खोलो
कौन गुलाम और कौन आजाद
कौन आबाद और कौन बर्बाद
ठंड ठिठुर कर है गुजरा
ग्रीष्म में मिली है कम्बल
सुनो राज मत खोलो
सत्य तो बिल्कुल मत बोलो
जो हो रहा वह होने दो
आंखों को जीभर रोने दो
किया हुआ है जो अपराध
कभी न होगा पश्चाताप
अरे रुकने दो ठहरने दो
आंधियों को थमने दो
बादलों को ढलने दो
रातों को संवरने दो
अपनो को बिकने दो

मिट्टी हवा और जल को
माँ की ममता और वतन को
 बिकने दो अरे बिकने दो
सपनो को बिकने दो!!
१ साल २ महीने पूरे हो गये
 लेकिन ये सरकार अभी भी
"सिधु मूसावाला को न्याय नही दे पाई।
उनके कातिल अभी भी फरार है
सरकार की लापरवाही की वजह
बूढ़े माँ पिता दर दर भटक रहे
अपने बेटे के न्याय को।
क्या उनके बेटे का गुनाह
सिर्फ इतना था की वो हद से
 ज्यादा सच बोलते थे और
लोगो के लिए आवाज उठाते थे
शायद आज सच मे न्याय और सच
दोनों ही बिक गये हैं
और इनको बिकने दो
क्यूकि आज कोई आवाज उठाने वाला
नही बचा
सच बोलने वाला नहीं रहा।।

Akanksha Awashti

ਤਕਰਾਰ

ਬਣ ਅਣਖੀ ਦਲੇਰੀ ਨਾਲ ਖੜਨਾ ਹੈ ਚਾਹੀਦਾ
ਲੁਕ ਛਿਪ ਕੇ ਤੁਸਾਂ ਦਿਨਾਂ ਨੂੰ ਇੰਝ ਨਾ ਪਾਰ ਕਰੋ।
ਬਾਜ਼ੀ ਜਿੱਤਣੀ ਹੋਵੇ ਜੇਕਰ ਹਰੇਕ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੀ
ਸਭ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਆਪਣੇ ਮਾਪਿਆ ਦਾ ਸਤਿਕਾਰ ਕਰੋ।
ਖੁਦ ਤੇ ਭਰੋਸਾ ਕਰਕੇ ਖੇਹ ਜਾਵੋ ਮੁਸੀਬਤਾਂ ਨਾਲ ਤੁਸੀ
ਐਵੇਂ ਕਿਸੇ ਲੰਡੂ ਜਿਹੇ ਦੀਆ ਗੱਲਾਂ ਤੇ ਨਾ ਇਤਬਾਰ ਕਰੋ।
ਜੇਕਰ ਸੱਚੇ ਖ਼ਵਾਬਾਂ ਨੂੰ ਬਣਾਉਣਾ ਹੈ ਹਕੀਕਤ
ਐਵੇਂ ਨਸ਼ਿਆ ਦੇ ਵਿਚ ਅਨਮੋਲ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਨਾ ਜ਼ਾਰ ਕਰੋ।
ਜਿਹਦੀ ਤਸੀਰ ਹੋਵੇ ਮੁੱਢ ਤੋਂ ਲੋਕਾ ਨਾਲ ਹੈ ਠੱਗੀਆਂ ਕਰਨੇ ਦੀ
ਅਜਿਹੇ ਬੇਗੈਰਾਤ ਨਾਲ ਨਾ ਕਦੇ ਤੁਸਾਂ ਵਪਾਰ ਕਰੋ।
ਜਦ ਜਾਪੇ ਸ਼ਰਧਾ ਲਟਕਦੀ ਦੌਲਤੀ ਸਲੀਬਾਂ 'ਤੇ
ਅਜਿਹੇ ਪੈਰੋਕਾਰਾਂ ਨੂੰ ਹੀ ਦੂਰੋਂ ਤੁਸਾਂ ਸਲਾਮ ਕਰੋ।
ਸਿੱਧੂ ਹਿਮਤ ਅੱਗੇ ਟਿਕਦੇ ਕਦੇ ਪਹਾੜ ਨਹੀਂ।
ਰੱਖ ਮੰਗ ਇਨਸਾਫ ਦੀ ,
ਨਾਲ ਹਕੂਮਤਾਂ ਤੁਸਾਂ ਅੱਜ ਤਕਰਾਰ ਕਰੋ।

ਚੁੱਪ ਵੱਟ ਲੈਣਾ

ਬਹੁਤ ਆਸਾਨ ਹੈ ਨਾ।
ਬਿਨਾ ਸੜਕਾਂ ਤੇ ਉਤਰੇ
ਹੱਕ ਇਨਸਾਫ਼ ਦੀ ਗੱਲ ਕਰਨਾ।
ਸਟੇਟਸ ਪਾ ਸ਼ਹੀਦ ਨੂੰ ਸ਼ਰਧਾਂਜਲੀ ਦੇਣਾ।
ਬਿਨਾ ਗਿਆਨ ਦੇ ਨਸੀਹਤਾਂ ਵੰਡਣਾ।
ਸਿਫ਼ਰ ਤੇ ਅਸ਼ਰ ਨੂੰ ਜਾਣੇ ਬਿਨਾਂ ਹੀ
ਗੱਲ ਦੇਸ਼ ਦੀ ਇਕਨੋਮੀ ਦੀ ਕਰਨਾ।
ਧਾਰਮਿਕਤਾ ਨੂੰ ਜਾਣੇ ਬਿਨਾਂ
ਅਵਾ ਤਵਾ ਬੋਲਣਾ।
ਟੀ ਵੀ ਤੇ ਤੁਹਾਡੇ ਮਨ ਦੀ ਬਾਤ ਕਿੰਝ ਹੋਣੀ।
ਜਦ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਸਭ ਤੋਂ ਉੱਚੇ ਓਹਦੇ ਤੇ
ਕਬਿਜ਼ ਲੋਕ ਹੀ
ਸ਼ਮਸ਼ਾਨ ਤੇ ਕਬਰਿਸਤਾਨ ਦੀ ਗੱਲ ਹੀ ਕਰਦੇ।
ਤੁਹਾਡੇ ਸੋ ਜਾਣ ਮਗਰੋਂ
ਹਾਮੀ ਮਸ਼ਵਰਾ ਸੰਪਤੀਆ ਵੇਚਣ ਲਈ ਹੀ ਭਰਦੇ।
ਆਸਥਾ ਵਿਚ ਕੁਰਸੀ ਹੀ ਰਹਿੰਦੀ ਇਹਨਾਂ
ਰਾਜ ਧਰਮ ਦੇ ਸਿਰ ਉਤੇ ਕਰਦੇ ।
ਵਾਦਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤ ਵਰਸ਼ਾ ਕਰਨ ਦਾ ਹੋਣਾ ਜ਼ਰੂਰ।

ਪਰ ਖਾਰ ਤੁਹਾਡੇ ਲਈ ਹੀ ਚੁਣਦੇ।

ਜੁਮਲੇ ਨੇ ਸਭ ਮਖੌਟੇ ਨੇ।

ਇਕੋ ਥਾਲ ਚ ਪਾਲੀਆਂ ਜੋਕਾਂ ਨੇ।

ਭੋਲੇ ਭਾਲੇ ਲੋਕ ਜੌਂ ਫਸ ਜਾਣ

ਇੰਝ ਸ਼ਬਦਾਂ ਦਾ ਜਾਲ ਇਹ ਬੁਣਦੇ ।

ਤਾਂ ਬਚੋ ਸਿਆਸਤਾਂ ਦੀਆ ਗੱਲਾ ਤੋਂ।

ਅੱਲਾਹ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਰਾਮ ਤੇ ਜੀਸਸ ਇਕੋ ਜੋਤਿ

ਫੇਰ ਵੀ ਕਿੰਝ ਲੋਕ ਦੰਗਿਆਂ ਵਿਚ ਪਏ ਮਰਦੇ।

ਅੱਖਾਂ ਮੀਚ ਕੇ

ਸੱਚ ਦੀ ਪੜਤਾਲ ਕਰਨਾ ਕਰੋ ਬੰਦ।

ਆਓ ਅੱਗੇ। ਇਹ ਸਮਾਜ

ਸੂਝ ਬੂਝ ਨਾਲ ਹੀ ਬਦਲੇਗਾ।

ਜੂਝ ਕੇ ਵਿਖਾਓ ਏਸ ਦੇਹਸ਼ਤ ਭਰੇ ਮਾਹੌਲ ਨਾਲ

ਸਿੱਧੂ ਹੱਕ ਤੇ ਇਨਸਾਫ਼ ਦੀ ਗੱਲ ਵੀ

ਨਿਡਰਤਾ ਨਾਲ ਕਰੋ।

ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਬਹੁਤ ਆਸਾਨ ਹੈ।

ਚੁੱਪ ਵੱਟ ਲੈਣਾ।

ਕਦੋਂ ਮਿਲਣਾ ਇਨਸਾਫ਼

ਏਸ ਘੜੀ ਬਹੁਤ ਯਾਦ ਆ ਰਿਹਾ।
ਨਵੀਂ ਲੋਕ ਕਥਾਵਾਂ ਵਾ ਨਾਇਕ
ਸ਼ੁਭਦੀਪ।
ਓਹ ਸੂਰਮਾ
ਜੀਹਨੇ ਸਮੇਂ ਦੇ ਹਕੂਮਤਾਂ ਨੂੰ ਵੰਗਾਰ
ਗੱਲ ਕੀਤੀ ਕਿਰਤੀ ਮਜ਼ਦੂਰ ਤੇ
ਦਬੇ ਕੁਚਲੇ ਲੋਕਾਂ ਦੀ।
ਓਹ ਸੂਰਮਾ
ਜੋ ਲਾਲਚ ਤੇ ਡਰਾਬਿਆਂ ਨਾਲ
ਭੋਰਾ ਨਾ ਘਬਰਾਇਆ।
ਤੇ ਪੰਜਾਬੀ ਮਾਂ ਬੋਲੀ ਦਾ ਓਹ ਸੂਰਾ ਪੁੱਤ
ਆਪਣੇ ਵਿਰਸੇ ਦਾ ਰਖਵਾਲਾ ਅਖਵਾਇਆ।
ਪਰ ਅੱਜ ਜਦੋਂ
ਸਿਆਸੀ ਰਹਿਬਰਾਂ ਨਾਲ ਪਲੇ ਗੁੰਡੇ।
ਚਿੱਟੇ ਦਿਨ ਦੇਹਸ਼ਤ ਫੈਲਾਉਂਦੇ ਨੇ।
ਤੇ ਸਾਡੇ ਬੁੱਧੀਜੀਵੀ
ਬਾਲ ਮੋਮਬੱਤੀਆਂ
ਫੇਰ ਸੋਸ਼ਲ ਮੀਡੀਆ ਤੇ ਥੋੜੇ ਚਿਰ ਦੀਆਂ

ਕਰ ਚਰਚਾਵਾਂ।

ਫੇਰ ਰਜਾਈ ਸਿਰ ਤੇ ਪਾ ਸੌਂ ਜਾਂਦੇ ਨੇ।

ਅਖਬਾਰ ਤੇ ਖਬਰਾਂ ਵਾਲੇ ਵੀ

ਏਸ ਵਿਸ਼ੇ ਤੇ

ਆਪਣੀ ਕਲਮ ਨੂੰ ਕੈਪ ਪਾ

ਜੇਬ ਚ ਲੁਕੋ ਜਾਂਦੇ ਨੇ।

ਤਦ ਮੈਂ ਸੋਚਦਾ।

ਕੌਣ ਨਿਤਰੂ ਏਸ ਮੈਦਾਨੇ।

ਕੌਣ ਕਢੂ ਯੂਥ ਨੂੰ ਨਸ਼ਿਆ ਦੇ ਜਾਲ਼ 'ਚੋ ਬਾਹਰ।

ਕੌਣ ਕਰੂ ਕੌਮ ਤੇ ਪੱਗ ਦੀ ਗੱਲ।

ਕੌਣ ਸਮਝਾਓ ਮਾਪਿਆ ਦਾ ਕਰਨਾ ਸਤਿਕਾਰ।

ਏਸੇ ਕਰਕੇ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਲੋਕ

ਸਿੱਧੂ ਰਹਿੰਦੇ ਤੈਨੂੰ ਪੁਕਾਰ।

ਕਿੱਥੇ ਹੈ ਤੂੰ? ਤੇ ਕਦ ਮਿਲਣਾ ਇਨਸਾਫ।

ਏਸੇ ਕਰਕੇ ਅਸੀਂ ਰੋਜ਼ ਲਗਾਉਂਦੇ

ਇਨਸਾਫ ਦੀ ਗੁਹਾਰ।

ਏਸ ਘੜੀ ਬਹੁਤ ਯਾਦ ਆ ਰਿਹਾ।

ਜੈ ਲੜਨਾ ਹੈ ਤਾਂ ਨਾਲ ਹਕੂਮਤਾਂ ਮੱਥਾ ਲਓ

ਗਲਤੀ ਮੇਰੀ ਨੂੰ
ਸ਼ਾਯਦ ਭੁੱਲ ਵੀ ਜਾਵਣ ਲੋਕ ਅਜਿਹੇ।
ਸਾਂਝ ਪ੍ਰੀਤ ਦੀਆ ਹੁੰਦੇ ਪਾਵਨ
ਯਾਰ ਬਥੇਰੇ।
ਪਰ ਗਲ ਮੇਰੀ ਓਹੀ ਪੁਰਾਣੀ।
ਅਫਸੋਸ ਦਾ ਬੱਦਲ ਜਦ ਵੀ ਅੰਗਾਰੇ ਵਰਦਾ।
ਮੇਰਾ ਪਿਛੋਕੜ ਹੋ ਮੈਨੂੰ ਅੱਗੇ ਚ ਸੜਦਾ।
ਹਤਿਆਰਾ ਹੈ ਤੂੰ ਮੈਨੂੰ ਸ਼ੀਸ਼ਾ ਦਸਦਾ।
ਏਸੇ ਵਜਹ ਕਰਕੇ ਮੈਂ ਸ਼ਮਸ਼ਾਨ ਦੇ ਨੇੜੇ ਵਸਦਾ।
ਤੁਸੀ ਚਾਹੋਗੇ ਕੇ ਮੈਂ ਥੋੜਾ ਬਦਲਾ।
ਪਰ ਆਪਣੀ ਸੋਚ ਨੂੰ ਮਾਰ ਕੇ
ਮੈਂ ਸਾਹ ਲੈਅ ਨੀ ਸਕਦਾ।
ਮੇਰਾ ਸਿਦਕ ਕਹਾਏ ਬਾਤ ਤੂੰ
ਇਨਸਾਫ ਦੀ ਕਰੀਂ।
ਜੁਲਮ ਜਫ਼ਜ਼ ਤੋਂ ਪਰਤੜਿਤ
ਗੱਲ ਨਮ ਅੱਖਾਂ ਦੀ ਕਰੀਂ।
ਸੁਪਨੇ ਮੇਰੇ ਵੀ ਆਹੀ ਨੇ
ਮੈਂ ਸੰਸਾਰ ਨੂੰ ਬਦਲਾ।

ਪਰ ਤੁਸੀ ਚਾਹੋਗੇ ਕੇ ਮੈਂ
ਪਹਿਲਾ ਆਪ ਨੂੰ ਬਦਲਾ।
ਇਹ ਹੋ ਨੀ ਸਕਣਾ
ਕੇ ਮੈਂ ਬੁੱਢੜੀ ਅੰਮੀ ਦੇ ਹੰਜੂ ਦੀ ਗੱਲ
ਭੁੱਲ ਜਾ ਕਰਨਾ।
ਸਿੱਧੂ ਤੇਰੇ ਨਾਂ ਨੂੰ ਭੁੱਲਣ ਵਾਲੇ
ਲੋਕਾ ਦੀ ਮੈਂ ਖਿਲਾਫਤ ਹਾਂ ਕਰਦਾ।
ਦੋਸ਼ ਮੇਰੇ ਤੇ ਬਹੁਤੇ ਨੇ
ਤੂੰ ਸਾਡੇ ਵਿਰੋਧ ਚ ਖੜਿਆ।
ਓਹ ਕਮਲਿਓ ਲੋਕੋ
ਮੈਂ ਸਦਾ ਦੀ ਸੱਚ ਦੇ ਰਾਹ ਤੇ ਇੰਝ ਹੀ ਖੜਿਆ।
ਜੈ ਲੜਨਾ ਹੈ ਤਾਂ ਨਾਲ ਹਕੂਮਤਾਂ ਮੱਥਾ ਲਓ।
ਕਰਦਾ ਆਹੀ ਗਲ ਮੇਰੇ
ਗ਼ਲਤ ਅਲਫਾਜ਼ ਨੂੰ ਤੁਸਾਂ ਭੁੱਲ ਵੀ ਜਾਓ।

ਨਿਤ ਹੀ ਹੁੰਦੀ ਕੱਲ

ਤੀਰਥਾ ਤੇ ਜਾਉਣ ਦੀ ਲੋੜ ਨਹੀਂ
ਸੇਵਾ ਕਰੀਏ ਜੇਕਰ ਮਾਪਿਆ ਦੀ।
ਸਨਮਾਨ ਦੀ ਪਾਤਰ ਹੈ ਇਕ ਨਾਰੀ
ਮੈਨੂੰ ਤਾਂ ਮੇਰੀ ਮਾਂ ਦੇ ਰੂਪ ਹੀ,
ਸਦਾ ਰੱਬ ਜਾਪਿਆ ਜੀ।

ਝੂਠੀ ਤਹਿਜ਼ੀਬ ਦੇ ਮਾਲਿਕ
ਹੁੰਦੇ ਨੇ ਦੇਸ਼ ਦੇ ਲੀਡਰ।
ਇਹਨਾ, ਮਾੜੀ ਹੈ ਆਦਤ
ਚੁਗਲੀ,ਚੋਰੀ,ਠੱਗੀ ਤੇ ਡਾਕਿਆਂ ਦੀ।
ਹਾਲ ਹੈ ਮਾੜਾ ਲੋਕਾਂ ਦਾ ਮਹਿੰਗਾਈ ਵਜੋਂ
ਗਲ ਕਰਨੀ ਮੈਂ,
ਦਿਸਦੇ ਪਾਟੇ ਲੀੜੇਆਂ ਤੇ ਵੱਜੇ ਟਾਕਿਆ ਦੀ।

ਕਾਲਾ ਧਨ ਤੇ ਕਾਲੇ ਵਾਪਰੀ
ਵਦੇਸ਼ਾ ਨੂੰ ਪੈਣ ਡੁਲਕੇ।
ਆਸ ਛੱਡ ਦਿਓ,
ਇਹਨਾ ਦੀ ਵਤਨਾਂ ਵਾਪਸੀ ਦੀ।

ਮਾਂ ਦੀ ਉਜੜੀ ਕੁੱਖ ਰੋਜ਼ ਕਰਦੀ ਸਵਾਲ ਸਿੱਧੂ।
ਸਿਸਟਮ ਤੋਂ ਮਿਲੇ ਇਨਸਾਫ ,
ਨਾ ਕੇ ਧਰਵਾਸ,
ਜੋਂ ਨਿਤ ਹੀ, ਹੁੰਦੀ ਕੱਲ ਦੀ।

ਸੌ ਢਕਨਸਿਆ ਨਾਲ ਨੀ ਰੱਬ ਮੰਨਦੇ ਹੁੰਦੇ।
ਓਹਨੂੰ ਫ਼ਿਕਰ ਹਰ ਨੇਕੀ ਦੇ ਸਾਚਿਆ ਦੀ।
ਪਰ ਸਿਫ਼ਤ ਤਾਂ ਕਰਨੀ ਬਣਦੀ ਹੈ
ਹਰ ਇਕ ਮਿਹਨਤਕਸ਼ ਕਿਸਾਨ ਮਜ਼ਦੂਰ
ਤੇ ਵਤਨ ਦੇ ਰਾਖਿਆ ਦੀ।

ਲਿਖਤਾਂ ਰਾਹੀਂ ਮੈਂ ਖੁਦ ਨੂੰ ਢਾਲਿਆ

ਬੇਸ਼ੁਕ ਮੈਂ ਹਾਂ ਮੁਜਰਮ।
ਆਪਣਾ ਸਿਵਾ ਮੈਂ, ਹੈ ਖੁਦ ਬਾਲਿਆ।
ਵਰਕਿਆਂ ਅੰਦਰ ਭੇਤ ਕਈ ਨੇ
ਇਹਨਾ ਲਿਖਤਾਂ ਰਾਹੀਂ ਮੈਂ ਖੁਦ ਨੂੰ ਢਾਲਿਆ।
ਸਦੀ ਕਿਹੜੀ ਵਿਚ ਵਿਕਾਸ ਹੈ ਦਿਸਦਾ।
ਝੂਠੇ ਜੁਮਲਿਆਂ ਨੇ ਦੇਸ਼ ਨੂੰ ਗਾਲਿਆ।
ਨਸ਼ਿਆ ਨੂੰ ਗੀਤਕਾਰ ਪ੍ਰਮੋਟ ਨੇ ਕਰਦੇ
ਸਭਿਆਚਾਰ ਨੂੰ ਇਹਨਾ ਮਨੋ ਵਿਸਾਰਿਆ ।
ਪੈਸੇ ਤੇ ਦਾਰੂ ਉਤੇ ਡੁੱਲਦੇ ਵੇਖੇ ਨੇ ਵੋਟਰ
ਲਾਲਚ ਹੈ ਭਾਰੂ, ਇਮਾਨ ਹੈ ਹਾਰਿਆ।
ਮੰਦਰਾਂ ਮਸਜਿਦਾਂ ਚ ਭਾਲਦੇ ਹੋ ਰੱਬ ਨੂੰ
ਕੈਦ ਮੂਰਤੀਆ ਤਵੀਤਾ ਚ , ਰੱਬ ਤੁਸਾਂ ਨੇ ਵਪਾਰਿਆ।
ਸਿੱਧੂ ਬੁੱਢੇ ਮਾਪਿਆਂ ਦੀ ਰੂਹ ਹੈ ਝੁਲਸਦੀ
ਵਹਾ ਨੀਰ ਅੱਖਾਂ ਚੋਂ, ਓਨਾਂ ਸਮੁੰਦਰਾ ਨੂੰ ਤਾਰਿਆ।
ਹਾਕਮ ਹੈ ਕੇਹੰਦਾ, ਮਿਟਾਵੇਗਾ ਚਾਨਣ ਨੂੰ।
ਸੂਲੀ ਤੇ ਚੜ ਅਸਾ ਰੋਜ਼ ਇਤਿਹਾਸ ਹੀ ਉਕਾਰਿਆ।
ਸੁਪਨਿਆ, ਜ਼ਰੂਰਤਾਂ, ਖੁਸ਼ਹਾਲੀ ਤੇ ਜ਼ਿੰਦਗੀ
ਬਿਨਾ ਸੰਘਰਸ਼ ਦਸ ਕੀਹਨੇ ਇਹ ਸਭ ਪਾ ਲਿਆ?
ਲਿਖਤਾਂ ਰਾਹੀਂ ਮੈਂ ਖੁਦ ਨੂੰ ਢਾਲਿਆ।

ਜਿੰਦਾ ਸਾਡੇ ਲਈ ਤੂੰ ਅੱਜ ਵੀ

ਰੋਸ਼ਨੀ ਦੇ ਮਹਿਲ ਅੰਦਰ

ਝੂਠ ਪਹਿਰੇਦਾਰ ਜੋ ਬਣਿਆ।

ਮਾਲਾ ਜਪਦਾ ਰੱਬ ਧਿਆਉਂਦਾ

ਬੰਦਾ ਰੱਬ ਦਾ ਪੈਰੋਕਾਰ ਵੀ ਬਣਿਆ।

ਦੀਵੇ ਹੇਠਾਂ ਦਿਸੇ ਹਨੇਰਾ

ਹਾਕਮ ਅੱਜ ਦਾ, ਚੌਂਕੀਦਾਰ ਹੈ ਬਣਿਆ।

ਅੰਨਦਾਤਾ ਅੱਜ ਭੁੱਖਾ ਸੌਦਾ

ਵੈਰੀ ਸਿਸਟਮ ਸੰਸਾਰ ਹੀ ਬਣਿਆ।

ਬੇਰੋਜ਼ਗਾਰ ਘਰ ਮੌਤ ਦਾ ਮੰਜ਼ਰ

ਸੜਕਾਂ ਉਤੇ ਭੁੱਖਾ ਖੜਿਆ।

ਅੰਧ ਭਗਤੀ ਸੋਚਣ ਨਾ ਦੇਵੇ

ਨਵਾਬ ਅੱਜ ਤਾਂ ਰੱਬ ਹੀ ਬਣਿਆ।

ਲੋਕ ਪੱਖੀ ਯਾ ਕਹਾ ਵਿਕਾਊ

ਹੱਥ ਮੀਡਿਆ ਦਾ ਸਿਆਸਤ ਨੇ ਹੈ ਫੜਿਆ।

ਸਿੱਧੂ ਗੋਲੀਆ ਨਾਲ ਕਿਝ ਵਿਚਾਰ ਨੇ ਰੁਕਦੇ

ਸਾਡੇ ਲਈ ਤਾ ਜਿੰਦਾ, ਤੂੰ ਅੱਜ ਵੀ ਅੜਿਆ।

ਇਨਸਾਫ਼ ਤੇਰੇ ਦੀ ਤਪਿਸ਼ ਸਾਡੇ ਜ਼ੇਰੇ

ਸਾਲ ਸਰਕਾਰੇ, ਲੇਟ ਲਤੀਫ਼ੀ ਹੜਿਆ।

ਅਖੀਰ ਨੂੰ ਜਿੱਤ ਸੱਚ ਦੀ ਹੋਣੀ।

ਭਾਵੇਂ ਝੂਠ ਦਾ ਭਾਰਾ ਲੱਖ ਹੋਵੇ ਭਰਿਆ।

ਫੁਰਸਤ ਕਿੱਥੇ ?

ਫੁਰਸਤ ਕਿੱਥੇ ?
ਮੇਰੇ ਮਨ ਨੂੰ ਮੌਜ ਕਿੱਥੇ ?
ਮੈਂ ਤਾਂ ਬਸ ਲਿਖਣਾ ਜਾਣਦਾ।
ਕਿਉਂਕਿ ਮੈਨੂੰ ਅਧੂਰੇ ਦਿਸਦੇ ਇਥੇ।
ਅਰਮਾਨ ਮਜ਼ਲੂਮ ਲੋਕਾਂ ਦੇ,
ਰੋਜ਼ ਹੀ ਟੁਟਦੇ ਜਿੱਥੇ।
ਪਾਟੀ ਜੇਬ 'ਚ ਖੜਕਦੀ ਭਾਨ।
ਗ੍ਰੰਥ ਤੇ ਹੱਥ ਧਰ ਕੇ, ਝੂਠਾ ਬੋਲਣ ਵਿਚ ਸ਼ਾਣ।
ਜਾਤ ਪਾਤ ਦੀ ਭੇਂਟ ਚੜ੍ਹਿਆ ਹਰ ਇਨਸਾਨ।
ਨਸ਼ਿਆ ਚ ਡੁੱਬਿਆ, ਪਿੰਡ ਮੇਰੇ ਦਾ ਘਬਰੂ ਜਵਾਨ।
ਸਿਰਫ ਕਾਗਜ਼ ਦੇ ਟੁਕੜਿਆਂ ਤੇ ਡੁੱਲਦਾ ਈਮਾਨ।
ਦੇਸ਼ ਦਾ ਇਕ ਹਾਕਮ, ਪਰ ਧਨਾਢ ਸੇਠ ਦਾ ਗੁਲਾਮ।
ਕੋਈ ਸਵਾਲ ਨੀ ਕਰਦਾ।
ਸਭ ਚੁੱਪ।
ਦਿਸੇ ਮੈਨੂੰ ਹਰ ਕੋਈ ਫੈਸਨ ਦੀ ਨਦੀ 'ਚ ਨਹਾਉਂਦਾ।
ਕੋਈ insta ਤੇ ਫਾਲੋਅਰ ਵਧਾਉਂਦਾ।
ਕੋਈ ਲੰਡੂ ਗੀਤ ਸੁਣਕੇ ਦਿਲ ਪਰਚਾਉਂਦਾ।
ਸੱਚ ਦੱਸਾਂ ਸਿੱਧੂ।

ਹਰ ਕੋਈ ਇਸ ਚਕਾਚੌਂਧ ਭਰੀ ਦੁਨੀਆਂ 'ਚ

ਗੁੰਮ ਹੋ ਜਾਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ।

ਕਿਸੇ ਕੋਲ ਜਰਾ ਵੀ ਵਕਤ ਨਹੀਂ।

ਹੁਣ ਕੋਈ ਹਾਲਾਤਾਂ ਵਲ ਵੇਖਦਾ ਤੱਕ ਨਹੀਂ।

ਪਰ ਮੈਂ ਨਹੀਂ ਹੈ ਬਣਨਾ ਓਹਨਾ ਵਾਂਗ ।

ਮੈਂ ਤਾਂ ਅੱਜ ਵੀ ਖੜਾ ਵਾਂ, ਤੇ ਅੱਗੇ ਵੀ ਖੜਨੇ।

ਇਨਸਾਫ ਦਾ ਮੰਗ ਪੱਤਰ ਹੱਥ ਵਿਚ ਫੜੀ।

ਤਾਂ ਮੈਨੂੰ ਫੁਰਸਤ ਕਿੱਥੇ ? ਮੇਰੇ ਮਨ ਨੂੰ ਮੌਜ ਕਿੱਥੇ ?

ਸਾਡਾ ਇਸ਼ਕ

ਗੱਲ ਕਿਰਤ ਹੋਣੀ

ਸੰਗਰਾਮ ਸਾਡਾ ਇਸ਼ਕ ਹੈ।

ਜੂਝਣਾ ਹਰ ਮਜ਼ਲੂਮ ਦੇ ਹੱਕ ਖਾਤਿਰ

ਮਰ ਜਾਣਾ ਸਾਡਾ ਇਸ਼ਕ ਹੈ।

ਦਿੱਲੀ ਦੇ ਤਖ਼ਤ ਤੇ

ਲੱਗੇ ਇਜਲਾਸ ਸਾਡਾ ਇਸ਼ਕ ਹੈ।

ਸੱਚੇ ਮਾਲਕ ਦੀ ਰਜ਼ਾ ਚ

ਹਿਮਾਇਤ ਸਾਡਾ ਇਸ਼ਕ ਹੈ।

ਜ਼ੁਲਮ ਦੀਆਂ ਛਵੀਆਂ ਚ

ਆਤਮ ਵਿਸ਼ਵਾਸ ਸਾਡਾ ਇਸ਼ਕ ਹੈ।

ਜਲਿਆਵਲੇ ਬਾਗ਼ ਦੀਆ ਕੰਧਾ □□□

ਵਹਿਆ ਰੱਤ ਸਾਡਾ ਇਸ਼ਕ ਹੈ।

ਅਜ਼ਾਦੀ ਲਈ ਫਾਂਸੀ ਤੇ ਝੂਲਿਆ

ਸਰਾਭਾ ਸਾਡਾ ਇਸ਼ਕ ਹੈ।

ਵਿਚ ਪਰਦੇਸਾਂ ਲਲਕਾਰਿਆ ਅਡਵਾਆਰ

ਸੂਰਮਾਂ ਊਧਮ ਸਾਡਾ ਇਸ਼ਕ ਹੈ।

ਮਹਿਲਾਂ ਤੇ ਕੋਠੀਆਂ ਦੀ ਰੀਸ ਨਹੀਓਂ

ਕੁੱਲੀਆਂ ਦਾ ਮੋਹ ਸਾਡਾ ਇਸ਼ਕ ਹੈ।

ਹੋਏ ਧੁੱਪ ਕੰਡੇ, ਪਸੀਨੇ ਭਿੱਜੇ ਤਨ ਸਾਡੇ
ਕਣਕਾਂ ਨਿਆਰੀਆਂ ਸਾਡਾ ਇਸ਼ਕ ਹੈ।
ਰਾਜ਼ੀਨਾਮਾ ਚੁੱਪ ਨਾਲ ਕਦੇ ਕਿੰਝ ਹੋਵੇ।
ਕਦਮ ਮੰਜ਼ਿਲਾ ਨੂੰ ਵਧਾਉਣਾ, ਸਾਡਾ ਇਸ਼ਕ ਹੈ।
ਸਿੱਧੂ ਬੁਤ ਬਣ ਮਾਪਿਆ ਦੀ ਪੀੜ ਜਰ ਕਿੰਝ ਹੋਵੇ।
ਤਕਸੀਮ ਜ਼ਬਰ ਨਾਲ ਟਾਕਰਾ
ਸਬਰ ਸਾਡਾ ਇਸ਼ਕ ਹੈ।

ਜਦ ਮਨ ਅੰਦਰ ਦੀਵੇ ਜਗਣਗੇ

ਜਦ ਮਨ ਅੰਦਰ ਦੀਵੇ ਜਗਣਗੇ।
ਹੱਕ ਤੇ ਸੱਚ ਲਈ ਖੜਨ ਵਾਲੇਓ
ਤੁਹਾਨੂੰ ਦਿਲ ਨਾਲ ਨਮਸਕਾਰ।
ਤੁਹਾਡੇ ਕਦਮਾਂ ਦੀ ਧੂੜ ਸਿਰ ਮੱਥੇ
ਲਈਏ ਅਸਾਂ ਲੱਖ ਵਾਰ।
ਸਾਲ ਹੋ ਗਯਾ ਹੈ।
ਨਿਗਾਹ ਹਾਲੇ ਵੀ ਇਨਸਾਫ ਦੇ ਤਰਾਜ਼ੂ ਵੱਲ।
ਸੰਨ ਦੇ ਨਾਮ ਬਦਲਨ ਨਾਲ
ਰਾਤ ਹਨੇਰਿਆ ਦੀ ਨੀ ਮੁਕੀ।
ਲੋਕ ਰਤ ਚੂਸਣ ਵਾਲੀ ਜੋਂਕ ਦੀ
ਭੁੱਖ ਹਾਲੇ ਥਾਈ ਵੀ ਨੀ ਮੁਕੀ।
ਤਾਂ ਜਾਗੋ।
ਮੱਥੇ ਟਿੱਕਾ ਲਾ ਕੇ ਇਹ
ਜੇਲ੍ਹਾਂ ਵਿਚੋ ਬੜਕਾਂ ਮਰਦੇ ਨੇ।
ਭੁੱਲੋ ਨਾ ਇਹਨਾਂ ਦੇਹਸ਼ਤ ਗਰਦਾ ਨੂੰ।
ਚਿੱਟੇ ਦਿਨ ਇਹ ਗੋਲੀਆਂ ਮਾਰਦੇ ਨੇ।
ਕਿਉਂ ਸਮੇਂ ਦੇ ਪੈਰਾਂ ਥੱਲੇ
ਪੱਥਰ ਸਮਝ ਸਾਨੂੰ ਲਤਾੜਿਆ ਹੈ ਜਾਂਦਾ।

ਕਿਉ ਇਨਸਾਫ਼ ਖਾਤਰ ਬੋਲਣ ਵਾਲਿਆਂ ਨੂੰ

ਜ਼ਿੰਦਾ ਭੱਠੀ ਵਿਚ ਸਾੜਿਆ ਹੈ ਜਾਂਦਾ।

ਪਰ ਅਸਾਂ ਤੂਫ਼ਾਨ ਹਾਂ।

ਜਿਹਨਾ ਸਮਾਂ ਬਦਲਣਾ ਹੈ।

ਸਮੇਂ ਦੇ ਹੱਕ ਮਜੂਦਾਂ ਪੱਖ ਅੰਦਰ

ਜੂਝਣਾ ਤੇ ਅਖੀਰ ਸਾਹ ਤੱਕ ਲੜਨਾ ਹੈ।

ਪਰਛਾਵਾਂ ਢਲੇ ਤੇ ਇਨਸਾਫ਼ ਦੀ ਲੋਅ ਉੱਠੇਗੀ।

ਤੇ ਰੁਸ਼ਨਾ ਦੇਵੇਗੀ ਇਹ ਸਾਰਾ ਵਾਤਾਵਰਨ।

ਸਾਰਾ ਮਾਤਮ।

ਜਦ ਮਨ ਅੰਦਰ ਦੀਵੇ ਜਗਣਗੇ।

ਔਖੇ ਰਾਹ ਤੇ ਚਲਦੇ

ਡੂਆਂ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਤਾਕਤ ਬਣਾਓ
ਔਖੇ ਰਾਹ ਤੇ ਚਲਦੇ ਜਾਓ।
ਔਕੜਾਂ ਰਸਤੇ ਜੇਕਰ ਆਵਣ
ਹਿਕ ਨਾਲ ਓਹਨੂੰ ਅਸਲ ਵਿਖਾਓ ।
ਫੜ ਪਟਵਾਰ ਆਪਣੇ ਹੱਥੀਂ
ਕਿਸ਼ਤੀ ਕਿਨਾਰੇ ਲੈ ਕੇ ਜਾਓ।
ਇਕ ਦੂਜੇ ਵੱਲ ਤੱਕਣਾ ਛੱਡ ਕੇ
ਨਜ਼ਰੀ ਅੰਬਰਾਂ ਪਾਰ ਲਿਜਾਓ।
ਤਲਬ ਜੰਨਤ ਦੀ ਮਰਨੋਂ ਮਗਰੋਂ
ਛੱਡ ਦਿਓ ਖੇੜਾ।
ਇਸ ਧਰਤੀ ਨੂੰ ਤੁਸੀ ਜੰਨਤ ਬਣਾਓ।
ਜਦ ਰਿਆਸਤ ਚਲੇ ਮਜ਼ਬੀ ਡੰਡੇ
ਫਿਰ ਗੱਲ ਖ਼ੂਨ ਖਿਲਾਰੇ ਤੀਕਰ ਚਲੇ।
ਨਾ ਰਹੋ ਚੁੱਪ ਚਾਪ ਜਬਰ ਨੂੰ ਸਹਿੰਦੇ।
ਦੀਵਾ ਸੋਚ ਦਾ ਆਕੇ ਰੁਸ਼ਨਾਓ।
ਕਰੋ ਮਜ਼ਲੂਮਾਂ ਦੀ ਬਾਬਰ ਏਕਤਾ
ਜ਼ਾਲਮ ਅੱਗੇ ਨਾ ਸਿਰ ਝੁਕਾਓ।
ਧਰਮ ਜ਼ਾਤ ਦੀ ਨਫ਼ਰਤ ਛੱਡ ਕੇ
ਵਿਚ ਏਕੇ ਦੀ ਸਾਂਝ ਪੁਗਾਓ।

ਨਵੀਂ ਸਮਾਜ ਦੀ ਲੋਅ

ਪਿੰਡ ਦਾ ਯੂਥ ਅਨਪੜ੍ਹ ਕਹਾਇਆ ਹੈ ਜਾਂਦਾ।
ਪਿੰਡ ਦਾ ਯੂਥ ਨਸ਼ੇੜੀ ਗਿਣਿਆ ਹੈ ਜਾਂਦਾ।
ਪਿੰਡ ਦੇ ਯੂਥ ਵਿਚ ਅਦਬ ਦੀ ਘਾਟ ਹੈ।
ਪਿੰਡ ਦਾ ਯੂਥ ਇੰਨਾ ਕਾਬਿਲ ਨਹੀਂ ਕੇ
ਸ਼ਹਰੀਆ ਦੀ ਬਰਾਬਰੀ ਕਰ ਲਵੇ।
ਇਹ ਕਿਸਨੇ ਕਿਹਾ ਤੁਹਾਨੂੰ ?
ਕੀਹਨੇ ਤੁਹਾਡੇ ਤੇ ਆਹ ਸੋਚ ਹੈ ਥੋਪੀ ?
ਖੇਤਾਂ ਚੋ ਨਿਕਲਿਆ ਪੁੱਤ
ਹਮੇਸ਼ਾ ਰਿੜਕਦਾ।
ਸਰਕਾਰਾਂ ਦੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਵਿਚ।
ਗੱਦਾਰਾਂ ਦੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਵਿਚ।
ਪੱਤਰਕਾਰਾਂ ਦੀਆ ਅੱਖਾਂ ਵਿੱਚ।
ਹਤਿਆਰਿਆਂ ਦੀਆਂ ਅੱਖਾਂ ਵਿਚ।
ਕਿਉਂਕਿ ਉਹ ਭਰਿਆ ਸਿਦਕ ਨਾਲ।
ਮਿਹਨਤੀ ਜਜ਼ਬੇ ਨਾਲ।
ਸਿੱਧੂ, ਨਾਕਾਮਯਾਬੀ ਤੇ ਵਿਤਕਰਾ
ਦੋਨੋ ਆਪਣੇ ਪਿੰਡੇ ਤੇ ਹੰਡਇਆ ਓਹਨੇ।
ਤਾਂ ਓਹਦੇ ਸ਼ਬਦ ਸੱਚੇ ਨੇ।

ਓਹਦੀ ਤਕਰੀਰ ਸੱਚੀ ਹੈ।

ਤਾਂ ਓਹਦੇ ਸ਼ਬਦ ਕਦੇ ਮਰਨਗੇ ਨਹੀਂ।

ਗੋਲੀਆਂ ਨਾਲ ਤਾਂ ਬਿਲਕੁਲ ਵੀ ਨਹੀਂ।

ਗੀਤਾਂ ਤੇ ਲਿਖਤਾਂ ਦੇ ਰੂਪ ਰਾਹੀਂ।

ਜਿਉਂਦੇ ਰਹਿਣਗੇ ਤੁਹਾਡੇ ਤੇ ਮੇਰੇ ਅੰਦਰ।

ਤੇ ਡਰ ਪੈਦਾ ਕਰਦੇ ਰਹਿਣਗੇ

ਇਹਨਾ ਹਕੂਮਤਾਂ ਨੂੰ।

ਕਿਉਂਕਿ ਇਹ ਜਗਾਉਂਦੇ ਰਹਿਣਗੇ

ਨਵੀਂ ਸੋਚ ਦੀ ਲੋਅ

ਏਸ ਸਮਾਜ ਅੰਦਰ।

ਜਦੋਂ ਤਾਰੀਖ਼ ਦੇ ਵਰਕੇ ਪੜ੍ਹੋਂ।

ਜਦੋਂ ਤਾਰੀਖ਼ ਦੇ ਵਰਕੇ ਪੜ੍ਹੋਂ,
ਤਾਂ ਸੋਚ ਕੇ ਪੜ੍ਹੀਓ,
ਖ਼ਤਾ ਹਕੂਮਤੀ ਕਰਦੇ ਨੇ,
ਤੇ ਨਾਂ ਹਜਾਰਤ ਦਾ ਰਹਿੰਦਾ ਐ।
ਪਹਿਲਾ ਵਰਕਾ ਪੜ੍ਹਦੇ ਹੀ
ਨਹੀਂ ਸੁਰਤ ਟਿਕਾਣੇ ਰਹਿਦੀ ਐ,
ਅਗਲਾ ਵਰਕਾ ਥਲਦੇ ਹੀ
ਦਹਸ਼ਤ ਮਨ ਵਿਚ ਪੈਂਦੀ ਐ।
ਸਿੱਧੂ ਡਰਾਕਲ ਜਿਹੇ ਲੋਕ ਨੇ ਇੱਥੇ,
ਬੜੇ ਹੌਕੇ ਹੰਢਾਏ ਫਿਰਦੇ ਐ।
ਕਦੇ ਡਰ ਰਹਿੰਦਾ ਦੁਨੀਆਦਾਰੀ ਦਾ
ਕਦੀ ਦਸਤੂਰ ਦੀ ਵੀਣ ਪੈਂਦੀ ਐ ।
ਇਹ ਮਜ਼ਦੂਰ ਨੇ ਕਬਰਾਂ ਆਪਣੀਆ ਦੇ,
ਜੋ ਖ਼ੁਦ ਲਈ ਪੱਥਰ ਢੋਂਦੇ ਰਹਿੰਦੇ ਐ।

ਪੁੱਤ ਤੁਰਗੇ ਛੱਡ ਜਹਾਨ ਇਥੋਂ ਦੇ
ਕਿਉਂ ਕਿਸਮਤਾਂ ਨੂੰ ਮਾਰ ਪੈਂਦੀ ਐ।
ਕਿਤੇ ਆਵਾਜ਼ ਅੰਮੜੀ ਦਾ ਵਿਰਲਾਪ ਦੀ
ਵੀ ਪੱਥਰ ਨੂੰ ਚੀਰਦੀ ਰਹਿੰਦੀ ਐ।
ਵਿਰਲੇ ਹੀ ਤੁਰਦੇ ਤਾਣ ਦੇ ਉਦੋਂ ਸੀਨਾ
ਜਦ ਰਣ ਵਿੱਚ ਸ਼ੂਕਦੇ ਤੀਰ ਐ।
ਜਦੋਂ ਸਮਾਂ ਸੱਚ ਨਾਲ ਖੜਨ ਦਾ ਹੋਵੇ
ਗੈਰਤ ਵਾਲੇ ਹੀ ਪਲਟਦੇ ਲਕੀਰ ਐ।
ਹੁਣ ਜਦੋਂ ਵੀ ਤਾਰੀਖ਼ ਦੇ ਵਰਕੇ ਪੜ੍ਹੋਂ,
ਤਾਂ ਸੋਚ ਕੇ ਪੜ੍ਹੀਓ।
ਚੱਲਦੀ ਕਲਮ ਰੱਖਣ ਲਈ,
ਤੈਨੂੰ ਕੁੱਝ ਹੋਰ ਪੜ੍ਹਨ ਦੀ ਲੋੜ ਨਹੀਂ ...

ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਪੁਛਣ ਲਈ ਸਵਾਲ ਕਈ ਨੇ

ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਪੁਛਣ ਲਈ ਸਵਾਲ ਕਈ ਨੇ
ਪਰ ਪੁੱਛਣਾ ਹੈ ਕੀਹਨੂੰ
ਬਸ ਇਹੀ ਮੈਂ ਜਾਨਣਾ ਚਾਹੁੰਦਾ।
ਅਨਾਜ ਨਹੀਂ ਹੈ ਘਰ ਪਿਆ
ਖਾਲੀ ਪੀਪਾ ਝਾੜ ਦੀ
ਓਸ ਬੀਬੀ ਨੂੰ ਪੁੱਛਾਂ ਯਾਂ ਸਰਕਾਰ ਨੂੰ।
ਧਾਰਮਿਕ ਸਥਾਨਾਂ ਦੇ ਬਾਹਰ
ਰੋਂਦੇ ਵਿਲਕਦੇ, ਭੀਖ ਮੰਗਦੇ ਪਏ ਨੇ ਬੱਚੇ।
ਕੀਹਨੂੰ ਪੁੱਛਾਂ।
ਓਹਨਾ ਬਚਿਆ ਨੂੰ ਜਾ ਓਸੇ ਧਰਮ ਦੇ ਪੈਰੋਕਾਰ ਨੂੰ।
ਕਿੰਨੀਆ ਸਾਲਾਨਾ ਨੋਕਰੀਆਂ ਪੈਦਾ
ਕਰਨ ਦੀ ਕਾਬਲੀਅਤ ਹੈ ਓਹਦੇ ਕੋਲ।
ਕੀਹਨੂੰ ਪੁੱਛਾਂ।
ਦੇਸ਼ ਦਾ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡੇ ਬਿਜਨੈਸਮੈਨ ਨੂੰ।
ਜਾ ਗੇਟ ਦੇ ਬਾਹਰ ਖੜੇ ਬੇਰੋਜ਼ਗਾਰ ਨੂੰ।
ਸਭ ਵਿਖਾਵੇ ਨੇ, ਝੂਠ ਨੇ।
ਕਿੰਝ ਸਵੀਕਾਰ ਕੀਤਾ ਜਾ ਸਕਦਾ?
ਇਨਸਾਫ਼ ਦੇ ਤਰਾਜ਼ੂ ਦਾ ਇਕ ਪਾਸੇ ਨੂੰ ਝੁਕ ਜਾਣਾ।

ਤੇ ਇਨਸਾਫ਼ ਦੀ ਗੁਹਾਰ ਲੱਗਾਉਂਦਿਆਂ ਸਿੱਧੂ।

ਸਾਡਾ ਵਿਚ ਰਾਹੇ ਰੁਕ ਜਾਣਾ।

ਅਸੀਂ ਨਹੀ ਹੈ ਰੁਕਣਾ।

ਤੇ ਹੌਂਸਲੇ ਬੁਲੰਦ ਨੇ ਸਾਡੇ।

ਸਾਡੀਆਂ ਫਸਲਾਂ ਦਾ ਮੂਲ ਓਹ ਦੇ ਨਹੀਂ ਨੇ ਸਕਦੇ।

ਪਰ ਗਿਣਤੀ ਖੁਦਖੁਸ਼ੀਆਂ ਕਰਦੇ ਦੀਆ ਹੁੰਦੀਆਂ ਨੇ।

ਬੇਸ਼ੱਕ ਅਕਲ ਸਾਰਿਆ ਕੋਲ ਹੀ ਹੋਵੇ ਮੌਜੂਦ।

ਪਰ ਮੀਡਿਆ ਕੋਲ ਸਿਫਤਾ

ਸਿਰਫ ਸਰਕਾਰ ਦੀਆ ਹੁੰਦੀਆਂ ਨੇ।

ਅਜਿਹਾ ਕਿਉਂ ?

ਤਾਂ ਮੇਰੇ ਕੋਲ ਪੁੱਛਣ ਲਈ ਸਵਾਲ ਕਈ ਨੇ।

ਸਿਰਫ ਗੱਲਾਂ ਰਾਹੀਂ ਨੀ ਬਦਵਾਲ ਹੁੰਦੇ

ਸਿਰਫ ਗੱਲਾਂ ਰਾਹੀਂ ਨੀ ਬਦਵਾਲ ਹੁੰਦੇ
ਜੇਲ੍ਹਾਂ ਚ ਗੈਂਗਸਟਰ ਬਣਾਉਣ ਵੀਡੀਓ ਰੀਲਾਂ
ਤੇ ਧਮਕੀਆਂ ਕੱਢ ਕੇ ਜਸ਼ਨ ਮਨਾਉਣ।
ਮੌਤ ਨਚਦੀ ਸੜਕਾਂ ਤੇ
ਰੰਗ ਅਖਬਾਰਾਂ ਦੇ ਕਿਉਂ ਲਾਲ ਹੁੰਦੇ।
ਸਿਰਫ ਗੱਲਾਂ ਰਾਹੀਂ ਨੀ ਬਦਵਾਲ ਹੁੰਦੇ।

✍ Hitesh Kumar
✍ Priyanshu Kurali

#JusticeForSidhuMoosewala

काश

काश ऐसा हो सकता।
काश ऐसा होता।
मैं जानती हूं ये शब्द "काश" बिल्कुल सही है ।
मेरी राय में अपनी विफलता दिखाने के लिए।
यह संभव है कि मैं कई स्थानों पर गलत हो जाऊं।
और इस शब्द का बार बार उपयोग करू।
लेकिन क्यों। में बेबस नही हु आपकी तरह।
काश मैं ऐसा होता।
काश ऐसा न होता।
मुझे नहीं पसंद यह शब्द ही। काश ।
लेकिन ये शब्द कई लोगों के लिए
सपने बुनता है।
"काश" को आशा की तरह देखो
तो सब बढ़िया लगने लगता है।।
काश ये दुनिया बेहतर होती.
काश, लोग प्रेम और अभिमान के समान न होते।
सही शब्द मैं चाहती हूं।
काश हर इंसान का चरित्र
एक उपज देने वाले पेड़ जैसा होता।
मैं चाहती हूं कि काश कोई भी धर्म जाति पर ना लड़े।

काश कोई भी व्यक्ति भोजन एवं ज्ञान से वंचित न रहे।
काश के न कोई गुलाम हो
और न कोई कायर।
मैं चाहती हूं सत्य और आस्था का भी कोई मूल्य हो।
काश के हर कोई सच बोले और सच का साथ दे।
काश, आँखें आसमान की ओर उठ जातीं।
तो लोगों में न बहस होती, न झगड़ा होता।
काश ऐसा हो सकता। मैं चाहती हूं।
काश यह दुनिया
सिद्धू तुम्हारे इंसाफ की बात रखने को आगे आए।
काश।
और में आकांक्षा यही उम्मीद रखती हूं।

✍ आकांक्षा अवस्थी।

Dedicated to my mother

I dedicate this book to both my mothers.

"Mother"

It is the soul of a child, but the day it goes away from us forever, then only those who have lost their mother can understand what those children go through. It is said that mother is our first teacher, she gives us good manners, daddy teaches us to face the outside world, both of them dedicate themselves for their children. When we are small, mother teaches us to walk by holding our finger, when we grow up, she stops us from going on any wrong path. But we are unable to do anything for them, no matter how much the child earns in the world, he cannot repay the debt of his mother and father. All the tiredness and troubles go away just by keeping the head in mother's lap. Eating food from mother's hands fills the soul. Mother is a real paradise which is met by a lot of luck. Mother is the one with whose single touch all the pains go away. There is only a mother who understands the problems of the children without saying anything. When mother puts her hand on the head, one feels heaven. I am very lucky that I was able to spend some time with my mother and also dreamed of spending my life with a mother. After losing my mother, I never had

any dreams or hopes. My luck was good and so was my mother. I had two mothers. I had happy moments with one. One of my mother who gave birth left her company 4 years ago and went to heaven forever and the other mother who is also said to have left her company before meeting her and went to heaven. I could not serve both my mothers. This regret is killing me inside. Even then, if there is a God, then only one thing has to be asked from them, if there is a second birth, then both of them should be returned to the mother; ,

Lots of love to both my moms..... May Waheguru ji give place to both my mothers in his feet and may they be happy wherever they are.

dedicate the book to both my mothers.

✍ Akanksha Awasthi

Harpreet kaur

I am Harpreet kaur lives with my family in UK. Writing is my hobby. I am writing from my college time. Today, I am a social worker, I always do work for the welfare for other people. I am always try best to make this world better to live.

ਮੋਹ ਦੀਆ ਤੰਦਾਂ

✓ ਭਾਵੇ ਅਸੀਂ ਪੰਜਾਬ ਤੋ ਹਜ਼ਾਰਾਂ ਮੀਲ ਦੂਰ ਹਾਂ ਪਰ ਪੰਜਾਬ ਸਾਡੇ ਦਿਲਾਂ ਵਿੱਚ ਵੱਸਦਾ ਹੈ। ਬਹੁਤ ਮੋਹ ਪਿਆਰ ਹੈ ਪੰਜਾਬ ਨਾਲ।ਪੰਜਾਬ ਵਿੱਚ ਕੀ ਹੋ ਰਿਹਾ ਹੈ, ਚੰਗਾ ਜਾਂ ਮਾੜਾ ਹਰ ਤਰਾਂ ਦੀ ਖ਼ਬਰ ਮਿਲਦੀ ਰਹਿੰਦੀ ਹੈ। ਕਿਸੇ ਵੀ ਮੁਲਕ ਵਿੱਚ ਚਲੇ ਜਾਈਏ, ਪਰ ਉਹ ਆਪਣਾਪਣ ਸਿਰਫ ਪੰਜਾਬ ਵਿੱਚ ਆ ਕੇ ਮਹਿਸੂਸ ਹੁੰਦਾ ਹੈ। ਪਰ ਪਿਛਲੇ ਕੁਝ ਸਮੇਂ ਤੋ ਪੰਜਾਬ ਵਿੱਚ ਬਹੁਤ ਅਣਸੁਖਾਵੀਆਂ ਘਟਨਾਂਵਾ ਵਾਪਰ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਨਸ਼ੇ ਨੇ ਵੀ ਬਹੁਤ ਨੋਜਵਾਨਾਂ ਦੀਆਂ ਜਾਨਾਂ ਲੈ ਲਈਆਂ। ਹੋਲੀ ਹੋਲੀ ਸਾਰਾ ਪੰਜਾਬ ਇਸ ਦੀ ਲਪੇਟ ਵਿੱਚ ਆ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਪਤਾ ਨਈ ਕਿਸ ਦੀ ਨਜ਼ਰ ਲੱਗ ਗਈ। ਪੰਜਾਬ ਉਹ ਪੰਜਾਬ ਰਿਹਾ ਹੀ ਨਈ। ਕਿਸੇ ਦੀ ਜਾਨ ਦੀ ਕੋਈ ਕੀਮਤ ਨਈ ਰਹੀ। ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਕੋਈ ਇਨਸਾਫ਼ ਵੀ ਨਈ ਮਿਲ ਰਿਹਾ।ਜੋ ਵੀ ਸਿੱਧੂ ਮੁਸੇਵਾਲੇ ਨਾਲ ਹੋਇਆ ਉਹ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਭੁੱਲਿਆ ਨਹੀਂ ਤੇ ਨਾਂ ਹੀ ਕਦੇ ਭੁੱਲ ਸਕਦੇ ਹਾਂ। ਉਸ ਦੇ ਮਾਤਾ ਪਿਤਾ ਅਜੇ ਵੀ ਇਨਸਾਫ਼ ਲਈ ਅਦਾਲਤਾਂ ਦੇ ਫੈਸਲੇ ਦਾ ਇੰਤਜ਼ਾਰ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ।

ਉਸ ਤੋਂ ਪਹਿਲੋ ਦੀਪ ਸਿੱਧੂ ਦਾ ਐਕਸੀਡੈਂਟ ਹੋਇਆ ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਉਸ ਦੀ ਜਾਨ ਚਲੇ ਗਈ। ਕੋਈ ਕੇਸ ਨਈ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਸਜ਼ਾ ਨਈ ਮਿਲੀ। ਸਿੱਧੂ

ਮੂਸੇ ਵਾਲੇ ਦੇ ਤਾਂ ਕਾਤਿਲ ਵੀ ਫੜੇ ਹੋਏ ਹਨ। ਬੱਸ ਤਰੀਕਾਂ ਹੀ ਪੈ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਉਸ ਦੇ ਕਤਲ ਪਿੱਛੇ ਕੋਈ ਰਾਜਨੀਤੀ ਮੰਤਵ ਸੀ ਜਾਂ ਕੋਈ ਨਿੱਜੀ ਦੁਸ਼ਮਣੀ, ਪਰ ਸਰਕਾਰਾਂ ਉਸ ਦੇ ਕਾਤਲਾਂ ਦੀ ਹਿਫ਼ਾਜ਼ਤ ਕਰ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਇੱਥੇ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਵੀ ਇਨਸਾਫ਼ ਦੀ ਉਡੀਕ ਕਰਦਿਆਂ ਕਈ ਸਾਲ ਬੀਤ ਜਾਂਦੇ ਹਨ।

ਪੰਜਾਬ ਵਿੱਚ ਹਾਲਾਤ ਖ਼ਰਾਬ ਹੋਂਣ ਦਾ ਕਾਰਨ ਬੇਰੁਜ਼ਗਾਰੀ ਵੀ ਹੈ। ਵਿਹਲੇ ਨੌਜਵਾਨ ਮਾਨਸਿਕ ਤੌਰ ਤੇ ਵੀ ਪਰੇਸ਼ਾਨ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਨੇ ਤੇ ਨਸ਼ੇ ਦਾ ਸ਼ਿਕਾਰ ਵੀ ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਹਨ। ਬਹੁਤ ਜ਼ਿਆਦਾ ਨੋਜਵਾਨਾਂ ਦੀਆ ਮੌਤਾਂ ਹੋ ਰਹੀਆਂ ਹਨ। ਰੋਜ਼ ਹੁੰਦੀਆਂ ਅਣਸੁਖਾਵੀਂ ਘਟਨਾਵਾਂ ਕਾਰਨ ਸਾਡਾ ਹੱਸਦਾ ਖੇਡਦਾ ਪੰਜਾਬ ਹੁਣ ਗਿਰਾਵਟ ਵੱਲ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ। ਇਹ ਗੁਰੂਆਂ ਪੀਰਾਂ ਦੀ ਧਰਤੀ ਤੇ ਜਿੰਨਾ ਲੋਕਾਂ ਨੇ ਜਨਮ ਲਿਆ ਉਹ ਜ਼ਰੂਰ ਇੰਨਾ ਕੁਰੀਤੀਆਂ ਦਾ ਮੁਕਾਬਲਾ ਕਰਨ ਲਈ ਉੱਠਣਗੇ। ਪਰ ਅਜੇ ਤਾਂ ਜੋ ਵੀ ਆਵਾਜ਼ ਚੁੱਕਦਾ ਹੈ ਉਸ ਦੀ ਆਵਾਜ਼ ਨੂੰ ਬੰਦ ਕਰਨ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ ਜਾ ਰਹੀ ਹੈ। ਸਿੱਧੂ ਮੂਸੇਵਾਲੇ ਨੇ ਵੀ SYL ਗਾਣਾ ਗਾਇਆ ਸੀ। ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਪਾਣੀਆਂ ਨੂੰ ਬਚਾਉਣ ਲਈ ਇਹ ਗਾਣਾ ਗਾਇਆ ਸੀ। ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਪਾਣੀ ਦਾ ਪੱਧਰ ਕਾਫ਼ੀ ਥੱਲੇ ਚਲੇ ਗਿਆ ਹੈ ਤੇ ਦੂਜੇ ਰਾਜਾਂ ਨੂੰ ਪਾਣੀ ਦਿੱਤਾ ਜਾ ਰਿਹਾ ਹੈ।

ਸਿੱਧੂ ਨੇ ਆਪਣੇ ਇਲਾਕੇ ਵਿੱਚ ਵੀ ਕਾਫ਼ੀ ਵਧੀਆ ਕੰਮ ਕੀਤੇ ਸੀ। ਆਪਣੇ ਇਲਾਕੇ ਦੀ ਤਰੱਕੀ ਵਾਰੇ ਸੋਚ ਰੱਖਦਾ ਸੀ। ਪਰ ਓਹਦੀ ਹੋਣੀ

ਨੇ ਓਹਨੂੰ ਘੇਰਾ ਪਾ ਲਿਆ ਤੇ ਸਾਡੇ ਤੋ ਇਕ ਹੀਰਾ ਖੋਹ ਲਿਆ। ਉਸ ਨੇ ਆਪਣੇ ਪਿੰਡ ਦਾ ਨਾਅ ਸਾਰੀ ਦੁਨੀਆਂ ਵਿੱਚ ਮਸ਼ਹੂਰ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਸੀ । ਅੱਜ ਵੀ ਉਸ ਦੇ ਘਰ ਦੇਸ਼ ਵਿਦੇਸ਼ ਤੋ ਲੋਕ ਆ ਰਹੇ ਨੇ । ਅਜੇ ਤਾਂ ਸਿੱਧੂ ਨੇ ਬਹੁਤ ਕੁਝ ਚੰਗਾ ਕਰਨ ਬਾਰੇ ਸੋਚਿਆ ਹੋਣਾ। ਪਰ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿੱਚ ਬਹੁਤ ਜਲਦੀ ਹੀ ਬੁਲੰਦੀਆਂ ਤੇ ਪਹੁੰਚ ਜਾਣਾ ਲੋਕਾਂ ਦੀਆਂ ਵਿੱਚ ਰੜਕਣ ਲੱਗ ਪੈਦਾ ਹੈ।

ਅੱਜ ਵੀ ਪਤਾ ਨਈ ਲੱਗ ਰਿਹਾ ਕਿ ਉਸ ਦੇ ਕਤਲ ਪਿੱਛੇ ਕਿਸ ਦਾ ਹੱਥ ਸੀ। ਅਸੀਂ ਤਾਂ ਇਹੀ ਉਮੀਦ ਕਰਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਉਸ ਦੇ ਕਾਤਲਾਂ ਨੂੰ ਜਲਦੀ ਇਨਸਾਫ਼ ਮਿਲੇ। ਜੇ ਉਸ ਦੇ ਕਾਤਲਾਂ ਨੂੰ ਸਜ਼ਾ ਮਿਲਦੀ ਹੈ ਤਾਂ ਬਾਕੀ ਵੀ ਇਸ ਤਰਾਂ ਦੇ ਜੁਰਮ ਕਰਨ ਤੋ ਪਹਿਲਾਂ ਸੋਚਣਗੇ। ਅਸੀਂ ਤਾਂ ਇਹੀ ਚਾਹੁੰਦੇ ਹਾਂ ਕਿ ਪੰਜਾਬ ਮੁੜ ਉਸ ਗੁਲ਼ਾਬ ਦੇ ਫੁੱਲ ਵਾਂਗ ਮਹਿਕਾਂ ਖਿਲਾਰੇ। ਪੰਜਾਬ ਵਿੱਚ ਪਰਵਾਸੀਆਂ ਦੀ ਗਿਣਤੀ ਵੀ ਬਹੁਤ ਵੱਧ ਗਈ ਹੈ। ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਨੇ ਬਾਹਰ ਦੇ ਮੁਲਕਾਂ ਵੱਲ ਜਾਣਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਹੈ। ਲੱਖਾਂ ਨੌਜਵਾਨ ਹਰ ਸਾਲ ਬਾਹਰ ਜਾ ਰਹੇ ਹਨ। ਜੇ ਸਰਕਾਰਾਂ ਆਪਣੇ ਦੇਸ਼ ਵਿੱਚ ਹੀ ਰੋਜ਼ਗਾਰ ਪੈਦਾ ਕਰਨ ਤਾਂ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਬਾਹਰ ਜਾਣਾ ਹੀ ਨਾ ਪਵੇ। ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਧਰਤੀ ਬਹੁਤ ਖੁਸ਼ਹਾਲ ਹੈ। ਜੇਕਰ ਸਹੀ ਤਰੀਕੇ ਨਾਲ ਕੰਮ ਕੀਤੇ ਜਾਣ ਤਾਂ ਪੰਜਾਬ ਕਿਸੇ ਤੋ ਪਿੱਛੇ ਨਹੀਂ ਰਹਿ ਸਕਦਾ।

ਇਸ ਸਾਲ ਸੰਨ 2023 ਵਿਚ ਆਏ ਹੜਾਂ ਦੀ ਮਾਰ ਨੇ ਵੀ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਲੋਕਾਂ ਦਾ ਬਹੁਤ ਨੁਕਸਾਨ ਕੀਤਾ। ਫਸਲਾਂ ਦੀ ਵੀ ਬਹੁਤ ਤਬਾਹੀ ਹੋਈ। ਕਿਸਾਨਾਂ ਨੂੰ ਤਾਂ ਪਹਿਲੋ ਹੀ ਕਰਜ਼ਿਆਂ ਨੇ ਨੱਪਿਆ ਹੋਇਆ ਹੈ। ਇਸ ਵਾਰ ਤਾਂ ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਇੰਨਾ ਨੁਕਸਾਨ ਓਹ ਕਿਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਝੱਲਣਗੇ । ਪਰ ਇਸ ਔਖੇ ਟਾਇਮ ਤੇ ਇਹ ਪਤਾ ਲਗਾ ਕਿ ਲੋਕਾਂ ਦਾ ਆਪਸੀ ਭਾਈਚਾਰਾ ਕਾਇਮ ਹੈ। ਲੋਕਾਂ ਨੇ ਰਲ ਮਿਲ ਕੇ ਰਾਤੋ ਰਾਤ ਬੰਨ ਬਣਾ ਲਏ। ਇਹੀ ਤਾਂ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਸਿਫ਼ਤ ਹੈ ਕਿ ਇਥੇ ਦੇ ਵਸਨੀਕ ਹਰ ਔਖੇ ਵੇਲੇ ਇਕ ਦੂਸਰੇ ਦਾ ਸਾਥ ਦਿੰਦੇ ਹਨ। ਫੇਰ ਚਾਹੇ ਓਹ ਇਸ ਵਾਰ ਹੜ੍ਹਾਂ ਦਾ ਮਸਲਾ ਹੋਵੇ ਯਾ ਸਾਡੀ ਜ਼ਮੀਨ ਖੋਂਦੇ ਕਾਲੇ ਕਨੂੰਨ ਦਾ ਮਤਾ ਹੋਵੇ। ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਮਿੱਟੀ ਵਿੱਚ ਹੀ ਖਿੱਚ ਹੈ ਕਿ ਦਿਲ ਕਰਦਾ ਹੈ ਕਿ ਪੰਜਾਬ ਜਾਈਏ। ਮੋਹ ਦੀਆਂ ਤੰਦਾਂ ਜੁੜੀਆਂ ਨੇ ਆਪਣੀ ਧਰਤੀ ਨਾਲ।

Harpreet kaur

Gurjant singh

ਮੇਰਾ ਨਾਮ ਗੁਰਜੰਟ ਸਿੰਘ ਹੈ |

ਮੈਂ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਪਿੰਡ ਕਾਲੇਵਾਲ

ਜ਼ਿਲ੍ਹੇ ਫਤਿਹਗੜ੍ਹ ਸਾਹਿਬ ਦਾ ਰਹਿਣ ਵਾਲਾ ਹਾਂ|

ਮੇਰੇ ਸ਼ੌਕ ਵਿੱਚ ਪੜ੍ਹਨਾ ਤੇ ਪੰਜਾਬੀ ਬੋਲੀ ਲਈ ਕੁਝ ਕਰਨਾ ਸ਼ਾਮਿਲ ਹੈ। ਮੈਂ ਇਹ ਸ਼ਬਦ ਸਾਰੇ ਪੰਜਾਬ ਦੇ ਹਰਮਨ ਪਿਆਰੇ ਗਾਇਕ ਸਿੱਧੂ ਮੂਸੇਵਾਲੇ ਜੀ ਤੇ ਲਿਖੇ ਨੇ ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦੇ ਗੀਤ ਮੈਂ ਕਾਫੀ ਲੰਬੇ ਅਰਸੇ ਤੋਂ ਸੁਣਦਾ ਤੇ ਪਸੰਦ ਕਰਦਾ ਆ ਰਿਹਾ।

ਜੱਟ ਦਾ ਮੁਕਾਬਲਾ

ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ ਮਨ ਅੱਗੇ ਤੂੰ ,
ਲੀਡਰਾਂ ਦੇ ਧੰਨ ਅੱਗੇ ਤੂੰ ,
ਸੂਟਰਾਂ ਦੇ ਅਸਲੇ ਅੱਗੇ ਤੂੰ ,
ਝੁੱਕਿਆ ਨਹੀਂ ਸੀ ਤੂੰ ।
ਅਸਲੇ ਦਾ ਖੌਫ਼ ਦੇਖ਼ ਲਈ ਤੂੰ ,
ਅੱਖਾਂ ਮੂਹਰੇ ਮੌਤ ਦੇਖ਼ ਲਈ ਤੂੰ ,
ਹੁੰਦੇ ਗੰਨ ਸ਼ੋਟ ਦੇਖ਼ ,
ਨਹੀਂ ਸੀ ਲੁੱਕਿਆ ਤੂੰ ।
ਗੈਸਟਰਾ ਦੇ ਸਾਹਮਣੇ ਝੁੱਕਿਆ ਨੀ ਸੀ ਤੂੰ ,
ਦਮ ਆਪਣੇ ਤੇ ਦੁਨੀਆਂ ਜੋਂ ਹਿਲਾ ਕੇ ਗਿਆ ਏ ਤੂੰ
ਤਾਹੀਓਂ ਕਿੱਸੇ ਤੋਂ ਤੇਰਾ ਰਿਕਾਰਡ ਟੁੱਟਿਆ ਨਹੀਂ ਸੀ ,
ਜੋ ਬਣਾ ਗਿਆ ਏ ਤੂੰ ।
ਹੋਰ ਕੋਈ ਰਿਕਾਰਡ ਬਣਾ ਸਕਦਾਏ ।

ਦੁਨੀਆਂ ਦਾ ਸਾਥ

ਮੈਨੂੰ ਮਿਲ਼ ਗਏ ਤੈਨੂੰ ਚਾਹੁੰਣ ਵਾਲੇ ਸਾਰੇ ,
ਤੇਰੇ ਲਈ ਮੇਰੇ ਨਾਲ਼ ਰੋਂਣ ਵਾਲ਼ੇ ਮਿਲ਼ ਗਏ ਨੇ ਸਾਰੇ।
ਧਰਨਿਆਂ ਦੇ ਨਾਲ ਖਾਲੋਣ ਵਾਲ਼ੇ ਹੁਣ ਮਿਲ਼ ਗਏ ਨੇ ,
ਮੈਨੂੰ ਆਪਣੇ ਮਾਂ ਅਖਵਾਉਂਣ ਵਾਲਿਆਂ ਮਾਵਾਂ ਹੁਣ ਮਿਲ਼ ਗਈਆਂ ਨੇ ।
ਪਰ ਮਿਲਦੇ ਨਾ ਓਹ ਦਿੱਸਦੇ ਨੇ ਓਹ ਮੈਨੂੰ ,
ਜਿਹੜੇ ਤੈਨੂੰ ਸਾਥੋਂ ਸਭ ਤੋਂ ਖੋਹਣ ਵਾਲੇ ਹਲੇ ਨਹੀਂ ਮਿਲੇ।
ਸਾਥੋਂ ਦੂਰ ਕਰਨ ਵਾਲ਼ੇ ਮਿਲ਼ੇ ,
ਉਹ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਧਰਤੀ ਤੇ ਨਹੀ ਰਹਿਣੇ ।
ਜਾਲਮਾਂ ਨੇ ਜੋਂ ਤੇਰੇ ਮਾਤਾ - ਪਿਤਾ ਦੇ ਹਸਦੇ ਵਸਦੇ
ਚਿਹਰੇ ਤੇ ਗਮ ਲਿਆਂਦਾ ।
ਉਹਨਾਂ ਨੇਂ ਹੁਣ ਇਸ ਦੁਨੀਆਂ ਵਿੱਚ ਨਹੀ ਰਹਿਣਾ ।

✍Its_gur._aman

ਜੱਟ ਦਾ ਸੁਭਾਅ

Reply ਕਰਕੇ ਅੱਗੇ ਅੱਗੇ ਭੱਜੇ ਨੇ ,

ਇੱਕੋ ਗੀਤ ਨਾਲ ਕਾਹਦੇ ਹੋਕੇ ਵਜੇ ਨੇਂ।

ਕਾਹਦਾ ਸੀ ਟਿੱਚਰਾਂ ਏ ਝਲਾ ਹੀ ਸੀ ਤੂੰ

ਹੋਰ ਵੀ ਬਥੇਰੇ ਸੀਰਾਂ ਕੱਲਾ ਨੀ ਸੀ ਤੂੰ।

ਡਕਾ ਨਹੀਓਂ ਪੁੱਤ ਹੁਣ ਥਕਾ ਹੋਓਗਾ ,

ਤੇਰੇ ਜਿਹੇ ਨਾਲ਼ ਤਾਂ ਵੀ ਪੱਕਾ ਹੋਗੁਆ ।

ਬੜਾ ਲਬਾਂ ਚਲੂ Show ਇੰਨੀ ਛੇਤੀ ਕਿੱਥੋਂ ਨਿੱਬੜ ਗਿਆ,

ਘੜੀਆਜਾ ਹੋਣਾ ਆ ਮੁੱਸੇਆਲਾ ਜੱਟ ਨੇ ਤਾਹੀਂ ਦੁਨੀਆਂ ਤੋਂ ਬਾਹਰ ਹੋ ਗਏ ।

✍Its_gur._aman

ਦੁਨੀਆਂ ਦਾ ਦਰਦ

ਉਹੀ ਦਿਨ ਮੁੜ ਆਵੇਗਾ, ਗੂੜ੍ਹੀ ਧੁੱਪ ਨਾਲ਼ ਤੇ ਗਹਿਰੀ ਚੁੱਪ ਨਾਲ ਭਰੀ ਨਾ ਮੁੱਕਣ ਆਲ਼ੀ ਦੁਪਹਿਰ ਜੋਂ ਮੈਨੂੰ ਅੱਜ ਵੀ ਉਸ ਦਿਨ ਦੀ ਜਾਦ ਕਰਵਾਉਂਦੀ ਆ,

ਮੈ ਅੱਜ ਵੀ ਉਸੇ ਦਹਿਲ ਜਾਂਦਾ ਆ ਕੁੱਝ ਦਿਨ ਰਹਿ ਗਏ ਆ ਤੁਹਾਨੂੰ ਗਿਆ ਨੂੰ ਸਾਲ ਬੀਤ ਜਾਵੇ ਤੇ।

✍Its_gur._aman

Gumnaam ♥

Hitesh Kumar Mutreja

ਸਵਾਲ ਕਰਨੇ

ਤੇ ਸਵਾਲ ਹੋਣੇ ਵੀ ਬਥੇਰੇ ਨੇ।

ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਚ ਜੇਕਰ ਹਾਸੇ ਨੇ

ਤਾਂ ਗਮ ਹੋਣੇ ਵੀ ਬਥੇਰੇ ਨੇ।

ਹਾਰ ਜਿੱਤ ਸਭ ਓਸ ਮਲਿਕ ਦੀ

ਦਿੱਤੀ ਸਵੀਕਾਰ ਵੀ ਹੈ ਮੈਨੂੰ।

ਓਹਨੇ ਰਹਿਮਤਾਂ ਚ ਪੂਰੇ

ਮੇਰੇ ਖ਼ਾਬ ਵੀ ਬਥੇਰੇ ਨੇ।

ਹਾਂ ਇਥੇ ਮੇਰੀ ਝੂਠੀ ਮੁਸਕਾਨ ਪਿੱਛੇ।

ਲੁਕਾਏ ਜਜ਼ਬਾਤ ਵੀ ਬਥੇਰੇ ਨੇ।

ਪਰ ਕੁਝ ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਨਕਾਬ ਪਿੱਛੇ।

ਝੂਠੇ ਵਾਅਦੇ ਵੀ ਬਥੇਰੇ ਨੇ।

ਹੋਣਾ sure ਮੇਰੇ ਤੋਂ

ਮੇਰਾ ਰਕੀਬ ਵੀ ਖ਼ਫ਼ਾ ਹਿਤੇਸ਼।

ਲੋਕਾਂ ਦੇ ਤਾਂ ਮੇਰੇ ਤੋਂ

ਸ਼ਿਕਵੇ ਹੀ ਬਥੇਰੇ ਨੇ।

ਮੈਂ ਕਦੇ ਜਾਂਦੀ ਨਹਿਰ ਦੇ

ਕਿਨਾਰੇ ਬੈਠਾ ਸੋਚਦਾ।

ਛੱਲਾਂ ਪਾਣੀ ਦੀਆ ਦੇਖਦਾ।

ਮਨ ਤਰਨੇ ਦੀ ਲੋਚਦਾ।

ਮੈਨੂੰ ਖਿੱਚਦੇ ਬੁਲਾਉਂਦੇ

ਓਹਦੇ ਇਸ਼ਾਰੇ ਵੀ ਬਥੇਰੇ ਨੇ।

ਪਰ ਅੱਖਾਂ ਮੇਰੇ ਬੁੱਢੇ ਮਾਪੇ ਦੀਆਂ ਵਿਚ

ਹਾਲੇ ਖ਼ਾਬ ਵੀ ਬਥੇਰੇ ਨੇ।

ਜੇਕਰ ਭੁੱਖ ਹੁੰਦੀ ਪੈਸੇ ਦੀ।

ਤਾਂ ਅਰਸ਼ਾਂ ਤੇ ਨਾਅ ਹੁੰਦਾ।

ਜੇਕਰ ਭੁੱਖ ਹੁੰਦੀ ਜਿਸਮਾਂ ਦੀ

ਤਾਂ ਕੀਤਾ ਹਰ ਮੈਂ ਗੁਨਾਹ ਹੁੰਦਾ।

ਪਰ ਅੱਗ ਇਸ਼ਕੇ ਦੀ ਲੱਗੀ ਸੀ।

ਜਾਂਦਾ ਸਿਵਿਆ ਨੂੰ ਰਾਹ ਹੁੰਦਾ।

ਤਾਂ ਮੇਰੀ ਲਿਖਤ ਦੀ ਬਣਤਰ ਵਿਚ

ਕਾਸ਼ ਨਾ ਰੁਕਣਾ ਅਥਾਹ ਹੁੰਦਾ।

ਰੁਕ ਵੀ ਮੈਂ ਜਾਂਦਾ ਉਥੇ।

ਜ਼ੁਬਾ ਤੇ ਤੇਰਾ ਨਾਅ ਆਉਂਦਾ।

ਖ਼ੈਰ ਕਹਿਣਾ ਤਾਂ ਮੈਂ ਚਾਉਂਦਾ

ਪਰ ਇਲਜਾਮ ਹਾਲੇ ਲਗਣੇ ਬਥੇਰੇ ਨੇ।

ਪਰ ਮੇਰੀ ਖੈਰ ਸੁਖ ਮੰਗਣ ਵਾਲੇ

ਇਥੇ ਫਰਿਆਦੀ ਵੀ ਬਥੇਰੇ ਨੇ।

ਲਿਖਤ ਦੀ ਬਣਤਰ ਚ

ਅੱਜ ਜਜ਼ਬਾਤ ਹੀ ਉਕੇਰੇ ਨੇ।

ਤੈਨੂੰ ਸਵਾਲ ਕਰਨੇ

ਤੇ ਸਵਾਲ ਹੋਣੇ ਵੀ ਬਥੇਰੇ ਨੇ।

कर्म करने में विश्वास रखना चाहिए

सिर्फ कहने में नहीं
करने में विश्वास रखना चाहिए।
बेशक हारो कभी।
लेकिन जीत का सेहरा
जनता के सिर बंधना चाहिए।
भगवान से प्रार्थना में सुबह
प्रसन्नता लोगों की खुशियों से भरी होनी चाहिए।
जहां भी गलत और जबरन हो रहा।
वहां कभी भी मौन नहीं खड़ना चाहिए।
न्याय की लड़ाई में जब अधिकार बिकता है
हमेशा पीड़ित मजदूरों का कंधा थामना चाहिए।
जब भी जमीन खिसकती नजर हो आपको।
तब रुख आकाश की ओर ही करना चाहिए।
आदर और सम्मान
हमेशा अपने से बड़े की करनी चाहिए।
जिसे हम दिल से प्यार करते हैं।
उनके प्रत्येक शब्द पर एतबार भी तो करना चाहिए।
मूर्ख लोगों की बातों पर ध्यान देने से हो बेहतर।

पथ का स्वयं परीक्षण खुद ही चलकर करना चाहिए।

अगर करना हो कभी

अपने अंदर के गुस्से को व्यक्त किसी वक्त में।

इसे कभी लिखकर तो कभी बोलकर करना चाहिए।

सिर्फ कहने में नहीं

करने में विश्वास रखना चाहिए।

बेशक हारो कभी।

लेकिन जीत का सेहरा

जनता के सिर बंधना चाहिए।

✍ Hitesh Kumar Mutreja

Ending Of Book (ਸਮਾਪਨ)

ਘਰੋਂ ਤਾਂ ਸੋਚ ਕੇ ਤੁਰਿਆ ਸੀ

ਉਹਨਾਂ ਨੂੰ ਹੋਵੇਗੀ ਉਡੀਕ।

ਮੈਂ ਸਾਰੀ ਰਾਤ , ਉਸ ਮੋੜ 'ਤੇ ਖੜ ਕੇ

ਤੈਨੂੰ ਉਡੀਕਦਾ ਰਿਹਾ।

ਪਰ ਚਲ ਕੋਈ ਨਾ।

ਆਹੀ ਸੋਚ ਲੈਂਦਾ ਕੇ

ਮੇਰੀ ਉਡੀਕ ਦਾ

ਮਘਦਾ ਹੋਇਆ ਸੂਰਜ

ਕਈਆਂ ਦੇ ਸਰਪ੍ਰਸਤ ਜੀਵਨ

ਚ ਰੌਸ਼ਨੀ ਦੀ ਵੀ ਲੈ ਆਈ ਹੋਣੀ।

ਸ਼ਾਯਦ ਮੇਰੀ ਕਲਮ ਚੋਂ ਨਿਕਲੇ

ਸ਼ਬਦਾਂ ਨੇ ਕਿਸੇ ਦੀ ਰੂਹ ਤਾਂ ਜਗਾਈ ਹੋਣੀ।

ਰਾਹ ਤੁਰਦਿਆਂ ਹੀ ਬਣਦੇ ਨੇ।

ਤੇ ਮੈਂ ਤੁਰਿਆ ਹਾ

ਤੇ ਤੁਰਦੇ ਰਹਿਣਾ ਸਦਾ।

ਹੱਕ ਤੇ ਸੱਚ ਲਈ ਖੜਿਆ ਹਾਂ।

ਲੜਿਆ ਹਾਂ ਤੇ ਬਿਨਾ ਕਦਮ ਲੜਖੜਾਏ

ਲੜਦੇ ਹੀ ਰਹਿਣਾ।

ਭਾਵੇਂ ਹਰ ਚੜ੍ਹਦੀ ਸਵੇਰ ਨੂੰ

ਤੇਰਾ ਚਿਹਰਾ ਮੇਰੇ ਜ਼ਿਹਨ ਚ

ਪਹਿਲਾਂ ਵਰਗਾ ਹੀ ਰਹੇਗਾ।

ਪਰ ਮੈਂ ਵਾਅਦਾ ਕਰਦਾ

ਹਰ ਚੜ੍ਹਦੀ ਸਵੇਰ ਨੂੰ

ਮੇਰੇ ਅੰਦਰ ਇਨਸਾਨੀਅਤ ਪ੍ਰਤੀ

ਬੜਾ ਕੁਝ ਨਵਾਂ ਹੁੰਦਾ ਰਹੇਗਾ।

Let's Continue the saga in

Vol 4....